Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24
website- www.dvpnews.in
रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 263 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 11 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

चार से बचो 1. दुर्व्यसनों से 2. अपनी प्रशंसा से 3. दूसरों की निंदा से 4. दूसरों के दोष से।

Be safe from these four 1. from badhabits, 2. from own admiration, 3. from others calumniation 4. from others faults.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

छत्तीसगढ़ में लागू हुई नक्सलवादी आत्मसमर्पण/पीड़ित राहत पुनर्वास नीति-2025, जिलों में समितियों के गठन के निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन ने राज्य में नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्रों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए नक्सलवादी आत्मसमर्पण/पीड़ित राहत पुनर्वास नीति-2025 को औपचारिक रूप से लागू कर दिया है। गृह विभाग द्वारा 28 मार्च 2025 को जारी अधिसूचना के अनुसार, इस नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सभी जिलों में जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में विशेष समितियों के गठन के निर्देश दिए गए हैं। यह नीति, नक्सल हिंसा में पीड़ित हुए व्यक्तियों एवं परिवारों जैसे कि मृत्यु, गंभीर घायल या स्थायी अपंगता के शिकार लोगों के साथ-साथ आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के पुनर्वास और राहत के उद्देश्य से तैयार की गई है।

जिला स्तर पर गठित की जाएगी पुनर्वास समिति : अधिसूचना के अनुसार, प्रत्येक जिले में गठित होने वाली समिति में कलेक्टर अध्यक्ष होंगे, जबकि पुलिस अधीक्षक को सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। इसके अतिरिक्त वनमंडलाधिकारी, जिला पंचायत के सीईओ, कलेक्टर द्वारा नामांकित दो अन्य अधिकारी तथा सशस्त्र बलों के प्रतिनिधियों को भी समिति में शामिल किया जाएगा।

नोडल अधिकारी होंगे नियुक्त : प्रत्येक जिले एवं सब-डिविजनल स्तर पर एक-एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति की जाएगी, जिनका मोबाइल नंबर व ई-मेल पता राज्य शासन को प्रेषित किया जाएगा। यह अधिकारी समस्त पुनर्वास कार्यों की निगरानी करेंगे। गृह विभाग ने निर्देशित किया है कि राज्य गठन के उपरांत से अब तक के सभी पीड़ित प्रकरणों को चिन्हित किया जाए और आत्मसमर्पित नक्सलियों का चयन कर राहत एवं पुनर्वास की कार्यवाही प्राथमिकता पर की जाए।

इस नीति के अंतर्गत एक विशेष पोर्टल विकसित किया जा रहा है, जिसमें प्रत्येक पीड़ित एवं आत्मसमर्पित व्यक्ति की जानकारी दर्ज की जाएगी और उन्हें एक यूनिक आईडी प्रदान की जाएगी। संबंधित अधिकारी इस पोर्टल के डैशबोर्ड का नियमित रूप से अवलोकन कर राहत एवं पुनर्वास के कार्यों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे। गृह विभाग ने कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि वे इस नीति के अंतर्गत निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए राहत एवं पुनर्वास की कार्यवाही को समय सीमा में प्रभावी रूप से पूरा करेंगे।

समाज की गौरवशाली विरासत को संजोए रखने की जरूरत : मुख्यमंत्री

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज

धमतरी जिले के रांकाडीह में आयोजित कंवर पैकरा समाज के नवनिर्वाचित आदिवासी पंचायत जनप्रतिनिधियों के सम्मान समारोह और धमतरी राज कंवर पैकरा समाज का वार्षिक महासभा में शामिल हुए। उन्होंने इस अवसर पर नगरीय निकाय निर्वाचन और त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन में विजयी जनप्रतिनिधियों को बधाई दी। मुख्यमंत्री ने गहिरागुरू बाबा द्वारा समाज कल्याण के लिए किये गये कार्यों को बताते हुए उनसे प्रेरणा लेकर समाज कल्याण के लिए कार्य करने की बात कही।

आतंकी तहव्वुर राणा को अमेरिका से प्रत्यर्पित कर भारत लाया गया

मुंबई हमले के पीड़ितों में खुशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26/11/2008 मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड एवं साजिशकर्ता तहव्वुर राणा को अमेरिका से प्रत्यर्पित कर भारत लाया गया है। इसे लेकर मुंबई हमले के पीड़ितों में काफी खुशी है। मुंबई हमले के हीरो और आतंकी अजमल कसाब को जिंदा पकड़ने वाले तुकाराम ओंबले के भाई एकनाथ ओंबले का कहना है कि ये देश के लिए बड़ा दिन है। उन्होंने तहव्वुर राणा को जल्द से जल्द फांसी देने की मांग भी की।

तहव्वुर राणा के भारत प्रत्यर्पण पर पाकिस्तान की पहली प्रतिक्रिया- तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण के पर पाकिस्तान की तरफ से पहला बयान आया है. पाकिस्तान ने तहव्वुर राणा से खुद को अलग किया है. पाकिस्तान विदेश कार्यालय ने एक बयान में कहा कि तहव्वुर राणा ने पिछले दो दशकों में अपने पाकिस्तानी दस्तावेजों का नवीनीकरण नहीं कराया है, उसकी कनाडाई नागरिकता बहुत साफ है.

तहव्वुर राणा को सजा-ए-मौत दी जाए- 26/11 मुंबई आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा की भारत वापसी पर शिवसेना नेता शाइना एनसी ने कहा कि यह उन लोगों के लिए एक जीत है, जिन्होंने उस आतंकी हमले में अपने परिजनों को खोया। गुरुवार को बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि 2019 से पीएम मोदी का लगातार प्रयास रहा है कि 26/11 मुंबई आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा को भारत वापस लाया जाए। हम सभी मांग करते हैं कि तहव्वुर राणा को सजा-ए-मौत दी जाए।

बता दें कि पाकिस्तान खुद को इसलिए अलग कर रहा है क्योंकि तहव्वुर राणा पाकिस्तानी सेना/आईएसआई का अंदरूनी सूत्र है, जो अब मुंबई 26/11 हमलों की साजिश में पाकिस्तान की प्रत्यक्ष भूमिका के बारे में खुलासा करेगा.

बंदूक का जवाब बंदूक से, वार्ता चाहते हैं तो मुख्यधारा में लौटें : विजय शर्मा

नक्सली नेता के पत्र पर छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री विजय शर्मा की दो टूक

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ में नक्सलियों ने सप्ताहभर के भीतर दूसरी बार राज्य सरकार को पत्र लिखकर शांतिवार्ता बात कही है। इस पर राज्य के गृह मंत्री विजय शर्मा ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बंदूक का जवाब बंदूक से होता है। अगर नक्सली चर्चा चाहते हैं, तो मुख्यधारा में आना होगा। दरअसल, नक्सली लीडर रूपेश ने बुधवार को पर्चा जारी किया। पर्चा में उन्होंने शांतिवार्ता के लिए हम तैयार हैं, इसके लिए अनुकूल माहौल बनाने की बात कही थी।

गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा कि नक्सलियों ने शांति वार्ता के लिए अपील की है, लेकिन वे सामने आएं। उन्होंने किसी समिति का जिक्र किया है, तो उस समिति को स्पष्ट करें। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार इसके के लिए कोई समिति की गठन नहीं की है। सरकार चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने कहा कि जो भी लोग बातचीत करना चाहते हैं, वे मुझसे संपर्क करें। मैं उन्हें सुरक्षा देने को तैयार हूं, लेकिन यह स्पष्ट है कि बंदूक का जवाब बंदूक से ही दिया जाएगा। हमारी सरकार कई बार नक्सलियों को मुख्यधारा में आने की अपील कर चुके हैं। गृह मंत्री ने कहा कि रूपेश समेत जिन्होंने यह पत्र लिखा है मैं सभी से कहना चाहूंगा कि वे बंदूक छोड़ें। हम बात करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा बंदूक का जवाब बंदूक से होता है। अगर आप चर्चा चाहते हैं, तो मुख्यधारा में आना होगा। डिप्टी सीएम शर्मा ने कहा कि कोई नक्सली सरेंडर करना चाहता है, तो हम तैयार हैं। हम छोटे-बड़े सभी समूहों के साथ चर्चा करने के लिए तैयार हैं। गृहमंत्री विजय शर्मा ने अगली बार भी यह बात कही थी कि वे शांतिवार्ता के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए कोई शर्त न हो।

केंद्रीय कोयला मंत्री जी किशन रेड्डी ने किया विश्व के दूसरे बड़े गेवरा कोयला खदान का निरीक्षण

खदान में उतरकर, कोयले को उठाकर खदान को करीब से देखा

कोरबा (विश्व परिवार)। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी किशन रेड्डी ने आज कोरबा जिले में स्थित भारत के सबसे बड़े और विश्व के दूसरे बड़े कोयला खदान का निरीक्षण किया। उन्होंने व्यू पॉइंट पर जाकर साउथ इस्टर्न कोलफिल्डस लिमिटेड (एसईसीएल) गेवरा खदान में कोयला उत्खनन-परिवहन की प्रक्रिया देखी। उन्होंने यहां आधुनिक तकनीकों के साथ किए जा रहे कोयला उत्पादन की प्रक्रिया को समझने के साथ ही खदान क्षेत्र में शावेल मशीन और डम्फर में चढ़कर लोडिंग और परिवहन की स्थिति को जाना। खदान के सरफेस एरिया में जाकर उन्होंने सरफेस माइनर से कोयला कटिंग को देखने के साथ ही हाथों में कोयला उठाकर क्वालिटी को परखा। कोयला एवं खान मंत्री ने गेवरा कोल एरिया के साइलो का भी अवलोकन किया और ट्रैक में कोयला लोडिंग की जानकारी ली।

केंद्रीय मंत्री श्री रेड्डी ने गेवरा खदान व्यू पॉइंट स्थल पर पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से एसईसीएल क्षेत्र में कोयला उत्पादन को लेकर किये जा रहे कार्य, परिवहन, तकनीकी समावेश, सामुदायिक विकास, पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों को भी जाना। मौके पर उपस्थित एसईसीएल के अधिकारियों ने कोयला उत्पादन को बढ़ाने की दिशा में भविष्य की योजनाओं की भी जानकारी दी। अधिकारियों ने केंद्रीय कोयला और खान मंत्री श्री रेड्डी को खदान क्षेत्र की सम्पूर्ण गतिविधियों को साझा किया। केंद्रीय मंत्री श्री रेड्डी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश मे ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरी पारदर्शिता और दृढ़ता के साथ काम किया जा रहा है।

भगवान महावीर जन्मकल्याण महोत्सव पर निकली भव्य शोभायात्रा, महावीर के जयकारों से गूंज उठी राजधानी

भगवान महावीर जयंती 2025 : जन्मकल्याणक समिति ने 20 दिन तक विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मनाया महोत्सव, जियो और जीने दो का दिया संदेश

भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन मानवता के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतीक : राजेश मूणत

पीएम नरेंद्र मोदी की बातों पर किया अमल, नवकार महामंत्र जाप के दौरान की थी अपील

रायपुर (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के क्रम में एमजी रोड स्थित जैन दादाबाड़ी में गुरूवार को हर्षोल्लास के साथ भगवान महावीर स्वामी की 2624वीं जयंती मनाई गई। जयंती के अवसर पर सुबह 8.30 बजे मालवीय रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर से भव्य शोभा यात्रा निकली जो श्री ऋषभदेव जैन श्वेतांबर मंदिर सदर बाजार होते हुए सत्ती बाजार, तात्यापारा, बढ़ईपारा, रामसागरपारा, गुरु नानक चौक होते हुए श्री जिन कुशल सूरी जैन दादाबाड़ी तीर्थ, एमजी रोड पहुंची। शोभायात्रा के दौरान सकल जैन समाज ने लोगों को ढाई हजार से ज्यादा पौधे बांटे। यह सारे पौधे कपड़े के थैले में बांटे गए।

भगवान महावीर जयंती के अवसर पर महावीर जन्मकल्याणक समिति के मुख्य संरक्षक पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं विधायक श्री राजेश मूणत मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि सकल जैन समाज की ओर से भगवान महावीर का 2624वाँ जन्म कल्याणक भव्यता के साथ से मनाया जा रहा है। भगवान महावीर का जीवन और उनकी शिक्षाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी वे प्राचीन काल में थीं। उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से समाज को अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह जैसे मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी।

राजेश मूणत ने कहा कि भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन मानवता के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतीक है। उनका जीवन और उनके उपदेश आज भी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे महान सिद्धांतों को न केवल स्वयं अपनाया, बल्कि समाज को भी इन सिद्धांतों पर चलने की राह दिखाई।

'जियो और जीने दो' का सन्देश देने वाले भगवान महावीर के उपदेश आज के समय में भी सभ्य और नैतिक समाज के निर्माण में उतने ही सार्थक हैं। उनका जीवन दर्शन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी मानव जीवन को दिशा देने वाला है। उन्होंने प्रदेशवासियों से इस पावन अवसर पर आह्वान किया है कि वे भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाकर एक आदर्श समाज की स्थापना में योगदान दें।

उल्लेखनीय है कि बुधवार को विश्व स्तरीय नवकर महामंत्र जाप के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सकल जैन समाज से यह अपील की थी कि सभी लोग पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम करें और पौधे लगाए। उन्होंने सभी से यह अपील की थी कि एक पेड़ मां के नाम जरूर लगाएं। साथ ही उन्होंने प्लास्टिक की जगह कपड़े के थैलों का उपयोग करने की बात कही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातों पर अमल करते हुए भगवान महावीर जयंती पर निकले भव्य शोभायात्रा के दौरान कपड़ों के थैले में पौधे बांटे गए और लोगों को नो-प्लास्टिक का संदेश दिया गया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के 20 दिवसीय आयोजन में प्रभात फेरी, रक्तदान शिविर, विभिन्न स्वास्थ्य शिविर, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों एवं स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों के दौरान भगवान महावीर का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।

साथ ही जीव दया की दिशा में एक रोटी गाय के नाम अभियान चलाकर लोगों से यह अपील की गई कि वह भी अपने घरों में एक रोटी गाय के नाम पर जरूर बनाएं और उन्हें खिलाएं। महोत्सव के दौरान नो प्लास्टिक का संदेश देते हुए मटके, पानी के जार और तांबे के लोटे का इस्तेमाल किया गया और प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने सभी से अपील की गई।

भगवान महावीर की हुई पंचकल्याणक पूजा : शोभायात्रा में भक्ति नृत्य करते समाजजनों के साथ भगवान का वरघोडा नगर के मुख्य मार्गों से होता हुआ दादाबाड़ी परिसर पहुंचा। मंदिर में भगवान महावीर की आरती के उपरांत भगवान महावीर स्वामी पंचकल्याणक पूजा विधि विधान से की गई।

समाज के सभी पुरुष सफेद कपड़े तथा महिला वर्ग केसरिया वस्त्र धारण कर इन धार्मिक आयोजनों में शामिल हुए। केवल मंदिर ही नहीं बल्कि जैन समाज के लोगों ने अपने घरों पर पताका और बैनर लगाकर भी महावीर जन्मकल्याणक का उल्लास प्रदर्शित किया। इस दौरान महावीर जन्म कल्याणक समिति के अध्यक्ष महावीर कोचर, महासचिव सिद्धार्थ डागा, कोषाध्यक्ष वीरेंद्र डागा आदि मौजूद रहे।

माता त्रिशला के 16 स्वप्नों और भगवान महावीर के जन्म का हुआ मंचन : महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर लोढ़ा विंग्स ने माता त्रिशला के सपनों की प्रस्तुति और नृत्य नाटिका का मंचन किया। नृत्य नाटिका में करीब 50 बच्चों, महिलाओं और युवाओं ने माता त्रिशला को आए 14 स्वप्नों का मंचन किया और उसके बाद भगवान महावीर का जन्म हुआ। यह नाटिका 1 घंटे चली जिसमें माता के सपनों और भगवान महावीर के जन्म का दृश्य जीवन होता जीवंत हो उठा। बच्चों और महिलाओं ने अलग-अलग नृत्यों की प्रस्तुति दी जिसमें भांगड़ा, भरतनाट्यम, ओड़िशी, कुचिपुड़ी, घूमर, करमा नृत्य समेत छत्तीसगढ़ के स्थानीय नृत्यों की प्रस्तुति दी। और इस दौरान उन्होंने नृत्य के अनुसार वेशभूषा धारण की, ताकि भारत के अनेक रंगों को एक मंच पर समेटा जा सके। प्रस्तुति के दौरान मंच के सामने बैठे समाज के सभी लोग भाव विभोर हो गए।

2624 दीयों से हुई भगवान महावीर की आरती : महावीर जयंती के अवसर पर भगवान महावीर स्वामी की 2624 दीपों से रात 12:36 बजे आरती हुई। रात को या दृश्य देखने लायक था जब प्रांगण के सभी लाइटों को बंद कर केवल दीपों से प्रभु की आरती की जा रही थी। समाज के सभी लोगों ने भगवान महावीर की आरती करते हुए विश्व कल्याण की प्रार्थना की।

महिला मंडल, युवा मंडल और व्यक्तित्वों का हुआ सम्मान : भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के दौरान 20 दिनों में हुए आयोजन और उनके आयोजनकर्ता मंडलों का सम्मान किया गया। महोत्सव के दौरान हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं जीवदया के करीब 100 से ज्यादा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का आयोजन, इनमें अपना योगदान देने वाले सदस्यों और संस्थाओं को महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति की ओर से सम्मानित किया गया।

वीर भक्ति गीत प्रतियोगिता में 20 से ज्यादा मंडलों ने प्रस्तुति दी : महावीर जयंती के अवसर पर रात्रिकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत वीरभक्ति गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 20 से ज्यादा मंडलों ने भाग लिया जिसमें महिलाओं-बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भगवान महावीर के जीवन पर आधारित प्रसंग को जीत के माध्यम से मंच में जीवंत बनाया गया। प्रस्तुति के दौरान उपस्थित समाजजन भाव-विभोर हो गए।

दादाबाड़ी में 346 लोगों ने किया रक्तदान

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर महावीर जयंती पर दादाबाड़ी प्रांगण में महारक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 346 लोगों ने ब्लड डोनेशन किया। वहीं, बुधवार तक महोत्सव के अंतर्गत 15 दिवसीय रक्तदान शिविर में कुल 357 ब्लड यूनिट का संकलन हुआ। महारक्तदान शिविर को मिलाकर महोत्सव के दौरान कुल 706 ब्लड यूनिट का डोनेशन समाजजनों ने किया। समिति के अध्यक्ष महावीर कोचर, महासचिव सिद्धार्थ डागा एवं कोषाध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने बताया कि 15 दिवसीय रक्तदान शिविर एवं महारक्तदान शिविर में एकत्रित होने वाले ब्लड यूनिट को ब्लड बैंक, समाजसेवकों और एनजीओ के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/देश
रायपुर, शुक्रवार 11 अप्रैल 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

भिलाई-चरौदा निगम कार्यालय पहुंचे दुर्ग कलेक्टर ने किया सुशासन तिहार शिविर का निरीक्षण

भिलाई (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई-चरौदा कार्यालय में गुरूवार दिनांक 10 अप्रैल 2025 को जिलाधीश दुर्ग श्री अभिजीत सिंह ने दौरा किया। कलेक्टर दुर्ग श्री सिंह ने निगम कार्यालय में चल रहे सुशासन तिहार शिविर का अवलोकन करते हुए उपस्थित कर्मचारियों से प्राप्त होने वाले आवेदनों की जानकारी ली और आवेदकों से बातचीत भी की। इसके पश्चात जिलाधीश श्री सिंह ने निगम कमिश्नर डी एस राजपूत एवं उनकी की टीम के साथ प्रधानमंत्री आवास ए.एच.पी. विट्ठल पुरम व उमदा तथा बिजली नगर भिलाई-03 के राजीव पारा स्लम का भी निरीक्षण किया। कलेक्टर दुर्ग के आज के दौरे की समाप्ती ट्रांसपोर्ट नगर फेस-02 का निरीक्षण करने के साथ हुयी। जहां निगम के अधिकारी को जिलाधीश द्वारा आगामी कार्य योजना हेतु निर्देश प्रदान किये। मौके पर भिलाई-03 एस.डी.एम. महेश सिंह राजपूत, निगम कमिश्नर डी एस राजपूत तथा कार्यपालन अभियंता प्रकाशचंद थवानी उपस्थित रहे।

श्री राम दूत परिवार द्वारा राम राज्य की भव्य शोभा यात्रा का आयोजन संजय नगर से प्रारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री राम दूत परिवार संजय नगर रायपुर द्वारा 09 अप्रैल 2025 को राम राज्य की भव्य शोभा यात्रा का आयोजन संजय नगर से प्रारंभ किया गया। समाज सेवी, गरीबो का जन प्रिय नेता एवं भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री मनमोहन सिंह चावला की मुख्य अतिथि मे भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। भव्य शोभा यात्रा के आयोजन मे श्री राम दूत परिवार, श्री जी आर चन्द्राकर, सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता, एस सान्याल, मुन्ना पांडेय, नीलेश शुक्ला, राहूल जैन, श्याम, दिव्यांश पाल युवराज राजपुत, एवं हजारो कार्यकर्ता की उपस्थति मे सम्पन्न हुआ।

6 महीनों में अलग-अलग रेकॉर्ड बुक्स में कई नए रेकॉर्ड दर्ज

रायपुर (विश्व परिवार)। मेरे पिछले 6 महीनों में अलग-अलग रेकॉर्ड बुक्स में कई नए रेकॉर्ड दर्ज हो चुके हैं, जिसमें यूनिक मैच

बॉक्स की चैन के साथ 3 आइटम्स, ओल्डेस्ट लाइसेंस बुक, एक दिन का परफ्यूम कलेक्शन, पेपर बैग्स, सबसे छोटी मां सरस्वती जी की पंच धातु की मूर्ति, सबसे छोटी कांच की ड्रापर वाली बॉटल,लांगेस्ट थैला शामिल है सभी के फोटो दे रही हु। अभी टॉर्च का कलेक्शन शुरू है। आप भी यदि कोई यूनिक चीजें दे सकते हैं, तो मेरे इस कार्य में सहायता हो जाएगी। साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए नई कपड़े की थैलियां भी निरंतर वितरित कर रही हूं, जो कि सबसे आवश्यक है। मेरे सब कार्यों में आप सबका सहयोग और आशीर्वाद मिलता है, जिससे मुझे कार्य करने की ऊर्जा मिलती है।

पीपला फाउंडेशन ने बनाया यात्रियों के लिए आशियाना, चिलचिलाती धूप से मिलेगी राहगीरों को राहत

आरंग (विश्व परिवार)। गुरुवार को महावीर जयंती के अवसर पर नगर के स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन के सदस्यों ने आरंग राजिम मार्ग पर स्थित रेलवे फाटक के समीप राहगीरों के लिए आशियाना का निर्माण किए हैं। जिससे कि राहगीरों को चिलचिलाती धूप से राहत मिल सके। फाउंडेशन के संयोजक महेन्द्र कुमार पटेल ने बताया इस मार्ग पर डबल रेल लाइन होने से गाड़ियों की संख्या काफी बढ़ गई है। हर घंटे तीन चार बार गाडियां क्रासिंग होती है।और अधिकतर बार तो एक बार फाटक बंद होने पर दो- तीन गाड़ियां क्रासिंग होती है। स्टेशन से लाकिंग सिस्टम होने के कारण फाटक खुलने में 20 से 25 मीनट तक लोगों को चिलचिलाती धूप में गाड़ियां क्रासिंग होने का इंतजार करना पड़ता है। आस-पास कोई छांवदार वृक्ष या प्रतीक्षालय भी नहीं है। जहां रुककर यात्री इंतजार कर सके। हालांकि पीपला फाउंडेशन के सदस्यों ने यहां छांव के लिए पौधे रोपित किए हैं जो अभी छोटे हैं। जिससे राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके लिए फाउंडेशन के सदस्यों ने संबलपुर डीआरजी मेंबर को पत्र लिखकर यहां स्थाई रूप से यात्री प्रतीक्षालय निर्माण कराने की मांग किए है। किंतु अभी तक रेलवे द्वारा कोई पहल नहीं करने से फाउंडेशन के सदस्यों ने अस्थाई रूप से खांसपूस से आशियाना बनाकर लोगों को राहत पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं यात्रीगण फाउंडेशन कि इस पहल का स्वागत करते हुए मुक्त कंठ से सराहना कर रहे है।

महापौर अलका बाघमार पहुँची सुशासन तिहार, काउंटर में बैठकर लोगों को किया फार्म वितरण

महापौर ने नागरिकों से उनकी समस्याओं को सुनकर उनकी अन्य समस्या का निराकरण करवाए जाने की बात कही

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम/छत्तीसगढ़ शासन के चलाए जा रहे सुशासन तिहार 2025 के तहत निगम क्षेत्रो के 06 स्थानों में सुशासन तिहार शिविर।आज बोरसी जोन कार्यालय में पहुँचकर महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने खुद काउंटर पर बैठकर लोगो से लिये कइ आवेदन और हितग्रहियो को बाटे फार्म।

महापौर ने नागरिकों से उनकी समस्याओं को सुनकर उनकी समस्या का निराकरण करवाए जाने की बात कही।उन्होंने अन्य समस्याओं के लिए जानकारी लेकर संबंधित विभाग को कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किए।सुशासन तिहार में सबसे ज्यादा माँग की आवेदन पहुच रहे है।

महापौर ने लोगों से मिलकर व्यवस्था की जानकारी ली और अधिकारियों को लोगों को आवेदन लिखने में भी सहयोग करने की बात कही। इस दौरान शिविर में एमआईसी सदस्य देवनारायण चन्द्राकर, चंद्रशेखर चन्द्राकर, ज्ञानेश्वर ताम्रकर, नीलेश अग्रवाल, पार्षद श्रीमती सविता साहू, पार्षद गुलशन साहू, पूर्व पार्षद ज्ञानदास बंजारे, कार्यपालन अभियंता वीपी मिश्रा, गंगाधर ठाकरे, सोमलता साहू, शिवेंद्र साहू सहित अन्य मौजूद रहें।

आयुक्त सुमित अग्रवाल ने कहा कि सुशासन तिहार पर समस्या लेकर पहुच रहे नागरिको को फार्म वितरण करें, केंद्रों में अधिक से अधिक फार्म रखा जाए, केंद्रों में फार्म की कमी न हो।

सुशासन तिहार अंतर्गत निगम क्षेत्रो में शिविर लगाया जा रहा है। जिसमें लोगों को अपने क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं की शिकायत समाधान पेटी में जमा करना है ताकि निगम प्रशासन उन शिकायतों का निराकरण कर सके।

शिविर में आने वाले आवेदनों में सबसे अधिक आवेदन पट्टा, राशन कार्ड से जुड़े हुए हैं। वहीं सड़क सीमेंटीकरण और रोशनी की व्यवस्था से जुड़े आवेदन, पाइप लाइन सीवरेज, नाली निर्माण, वृद्धा पेंशन से भी जुड़े आवेदन शिविर में आ रहे हैं।जिसमें शिकायत से अधिक मांग के आवेदन हैं।

कुल 647 आवेदन प्राप्त हुए जिसमे बोरसी ज़ोन कार्यालय से माँग 182 व शिकायत 3 मिले, चंद्रशेखर स्कूल में माँग के 78 आवेदन और शिकायत के 11 मिले, उरला जोन कार्यालय से 26 माँग के आवेदन तो शिकायत के 23 मिले, महात्मा गांधी स्कूल से माँग के 8 आवेदन और शिकायत के 3 आवेदन मिले।इसके अलावा नगर निगम कार्यालय से 122 माँग के आवेदन एवं 17 शिकायत के आवेदन मिले इसके अलावा आदित्य नगर जोन कार्यालय से 163 माँग के आवेदन और 11 शिकायत के आवेदन मिले।

सुशासन तिहार में अब तक 409 लोग पहुंचे समाधान पेटी तक

रिसाली (विश्व परिवार)। राज्य स्तरीय सुशासन तिहार में रिसाली **शिकायत से ज्यादा है मांग** में शिकायत कम मांग ज्यादा है। अब तक 409 लोग शिविर स्थल पहुंचे। समस्या और मांग आवेदन को समाधान पेटी में डालते निराकरण करने निगम प्रशासन से अनुरोध किया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव और दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर के मार्गदर्शन में चल रहे सुशासन तिहार में आम नागरिक अपनी समस्या और मांग को लेकर निगम कार्यालय तक पहुंच रहे है। वे अपनी समस्या मूलक आवेदन लेकर निगम द्वारा रखे गए समाधान पेटी में आवेदन जमा कर रहे है। उल्लेखनीय है कि पहले दिन 83 लोगों ने आवेदन प्रस्तुत किया है। वहीं तीसरे दिन तक 409 लोगों ने आवेदन समाधान पेटी में डाला है।नगर पालिक निगम के प्रभारी आयुक्त व कार्यापालन अभियंता सुनिल दुबे ने बताया कि अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करने शिविर के बारे में जानकारी दी जा रही है। मुनादी के अलावा जनप्रधिनियों को भी विस्तृत जानकारी दी गई है। शुक्रवार को शिविर का आखरी दिन रहेगा।

पशुपति नाथ मंदिर परिसर की साफ-सफाई में तत्परता से जुटे महापौर और अमला

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने साफ सफाई की कमान स्वय संभाली

शहर में चल रहे स्वच्छता अभियान का हिस्सा, शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाना है :महापौर

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत आज महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने नागरिको के साथ पशुपति नाथ मंदिर परिसर की समुचित साफ सफाई के लिए नगर निगम का अमला तत्परता के साथ जुट गया। मंदिरो से श्रद्धालुओं की आस्था जुड़ी हुई है। रोजाना भक्तों की इस मंदिर में भीड़ भी जुटती है।रोजना मंदिर में दर्शन हेतु भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। श्रद्धालुओं की आस्था को देखते हुए मंदिर के आस पास समुचित साफ सफाई कराने हेतु महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने साफ सफाई की कमान स्वय संभाली। उनकी मौजूदगी में निगम के सफाई अमले ने साफ सफाई की। इस दौरान पार्षद श्रीमती नीलम शिवेंद्र परिहार, महिला मोर्चा महामंत्री जयश्री राजपूत, स्वेता ताम्रकर, ममता गिरूंग, सुरेश दीक्षित, करण करोसिया सहित अन्य मौजूद रहें। महापौर ने शहरवासियों को आश्वस्त करते हुए कहा मंदिरों से श्रद्धालुओं की आस्था जुड़ी होती है इसलिए मंदिरों के आस पास नियमित साफ सफाई का ध्यान रखा जाएगा।

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने पहले नागरिकों से भी सहयोग की अपील की- महापौर श्रीमती अलका बाघमार द्वारा वार्ड पार्षद श्रीमती नीलम शिवेंद्र परिहार के साथ वार्ड क्रमांक 59 स्थित तालाब की सफाई स्थानीय लोगो और निगम कर्मियों के साथ मिलकर तालाब से नवरात्र में किये गए विसर्जन सामग्री, फूल माला, पालीथीन को तालाब 24 से बाहर निकाला। सुबह एक घंटा से अधिक समय तक चले इस अभियान में टैक्टर ट्राली भरकर कचरा निकाला गया। महापौर कहा है कि तालाबों की सफाई निरंतर जारी रहनी चाहिए, ताकि ये साफ सुथरे रहें और लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध हो सके. शहर में चल रहे स्वच्छता अभियान का हिस्सा, शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाना है. पर्यावरण संरक्षण। तालाबों की सफाई पर्यावरण संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे जल प्रदूषण कम होता है और जलीय जीवन को बचाया जा सकता है। साफ-सुथरे तालाब लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी हैं, क्योंकि इससे जल जनित बीमारियों को रोका जा सकता है।

दुर्ग जिलाधीश नगर निगम भिलाई क्षेत्र में सुशासन तिहार, खुर्सीपार मिनी स्टेडियम वं इंडोर स्टेडियम का दुर्ग जिलाधीश ने किया निरीक्षण

भिलाई (विश्व परिवार)। आज नगर निगम भिलाई क्षेत्र में दुर्ग जिलाधीश अभिजीत सिंह निरीक्षण करने पहुंचे, सर्वप्रथम उनके द्वारा सुशासन तिहार 2025 में प्राप्त आवेदनों की जानकारी प्राप्त की, किस प्रकार के आवेदन प्राप्त हो रहे हैं। लोगों की प्रमुख रूप से क्या आवश्यकता है, क्या मांग है, किस प्रकार के आवेदन ज्यादा आ रहे हैं, इस सब के बारे में आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय एवं उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से जानकारी प्राप्त किये। इस दौरान सुपेला निवासी शांति बाई साहू शिकायत करने आई थी की उनके घर में पानी एवं सफाई की समस्या है। तुरंत कर्मचारियों को भेज करके निराकरण करवाया गया, न्यू खुर्सीपार निवासी ध्रुव सिंह की शिकायत थी खाते में पेंशन नहीं आ रहा है पता किया गया तो इंडियन बैंक में पेंशन जा रहा है उन्हें मालूम नहीं था। तत्पश्चात खुर्सीपार मिनी स्टेडियम का निरीक्षण करने करने गए। स्टेडियम के नीचे 2007 से बनी हुई दुकाने है उसे किस प्रकार से वर्तमान स्थिति में मूल्यांकन करके उपयोगी बनाया जाए इस पर चर्चा किये। इसके बाद खुर्सीपार में निर्मित इनडोर स्टेडियम का निरीक्षण करने गए। स्टेडियम का निर्माण लोक कर्म विभाग दुर्ग द्वारा किया गया था। निर्माण उपरांत खेल विभाग दुर्ग के अधिपत्य में दे दिया गया था। वर्तमान में स्टेडियम की स्थिति देखकर के नाराजगी व्यक्त किये उन्होंने कहा कि इतने अच्छे प्राइम लोकेशन पर निर्मित स्टेडियम में से खिड़की दरवाजे, खेल सामग्री, विद्युतीकरण सामग्री चोरी हो गया किसी को पता नहीं चला। जबकि स्टेडियम से 500 मीटर दूरी पर खुर्सीपार पुलिस थाना है। उन्होंने खेल अधिकारी से पूछा खेल विभाग द्वारा इसे नगर निगम को हैंडोवर क्यों नहीं किया गया। जिलाधीश के आदेश पर तुरंत एक संयुक्त जांच समिति गठित किया गया है। जिसके द्वारा किन-किन संपत्तियों का नुकसान हुआ है उसका वास्तविक अवलोकन किया जाएगा। जिसमें लोक निर्माण विभाग दुर्ग से कार्यपाली अभियंता एवं सहायक अभियंता, खेल एवं युवा कल्याण विभाग दुर्ग से उपसंचालक एवं खेल अधिकारी, थाना छावनी के थाना प्रभारी, नगर निगम भिलाई के जोन आयुक्त एवं कार्यपालन अभियंता नुकसान का वास्तविक आकलन करके 15 दिन के अंदर रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। जनसंपर्क विभाग, नगर पालिक निगम, भिलाई।

पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने नगर पंचायत इंदौरी में किया अटल परिसर का लोकार्पण

भारत के नवनिर्माण में अटल जी का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणा है : भावना बोहरा

रायपुर (विश्व परिवार)। 25 दिसंबर 2024 को पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती एवं सुशासन दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी ने प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में अटल परिसर बनाने की घोषणा की थी। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माता स्व.अटल जी की स्मृति में नगर पंचायत इंदौरी में 20 लाख रुपए की लागत से निर्मित अटल परिसर का आज पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने लोकार्पण किया और समस्त क्षेत्रवासियों को बधाई व सुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर नगर पंचायत इंदौरी की अध्यक्ष मित्रीन बाई महँगी लाल मांडले जी, सभी पार्षदगण, जनप्रतिनिधि एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने कहा कि स्व.अटल बिहारी वाजपेयी जी ने छत्तीसगढ़ को अलग राज्य का दर्जा देकर यहां के निवासियों को बड़ी सौगात दी इसके साथ ही उन्होंने प्रदेश के विकास हेतु जो सौगातें दी एवं अपने सुशासन में आजीवन राष्ट्र की प्रगति और राष्ट्र के नागरिकों की उन्नति में समर्पित रहे। भारत के नवनिर्माण में उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। अटल जी के सुशासन एवं एक भारत-श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को सार्थक करते हुए जनकल्याण व प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के सुशासन और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत-विकसित छत्तीसगढ़ के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हम कटिबद्ध हैं। आज उनके ही आदर्शों को स्मरण करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में डबल इंजन भाजपा सरकार के रूप में प्रदेश में सुशासन का उदय हुआ है। आज प्रदेश में विकास की रफ़्तार हमारे गाँव-गाँव में ट्रिपल इंजन की रफ़्तार से हो रहे हैं। नता की सुविधाओं, अधोसंरचना विकास, सड़कों का विस्तार, आवास का निर्माण, घर घर शुद्ध पेयजल, बिजली की पर्याप्त व्यवस्था आज भाजपा सरकार के कुशल नेतृत्व में पूर्ण पारदर्शिता के साथ योजनाओं का क्रियान्वयन एवं जनता तक सीधे उसका लाभ पहुँच रहा है। उन्होंने कहा कि नगर पंचायत इंदौरी में भी विकास कार्य तीव्र गति से चल रहें हैं। भाजपा की सरकार बनने के बार महज 15 महीनों के भीतर ही नगर पंचायत इंदौरी में लगभग 4 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की स्वीकृति मिली है बहुत से कार्य प्रगति पर हैं तो कुछ पूर्ण हो चुके हैं।

हिमालय की बर्फीली वादियों में दौड़ेगी वंदे भारत, आधुनिक तकनीक और सुविधाओं से लैस

जम्मू कश्मीर (विश्व परिवार)। अप्रैल की हल्की ठंडक और वसंत की खिलती बहार, हिमालय की बर्फीली चोटियाँ, सेब के पेड़ों पर गुलाबी फूलों की चादर, और मैदानों की हरी घास- यह सब अब सिर्फ कल्पना नहीं रहेगा। क्योंकि अब जल्द ही, यह सब आप अपनी आंखों के सामने, जम्मू कश्मीर के लिए स्पेशल डिजाइंड वंदे भारत ट्रेन में बैठकर देख सकेंगे। जैसे ही ट्रेन पहलगाम की घाटियों से गुजरेगी, हरियाली से सजी वादियाँ, दूर तक फैले चीड़ के जंगल और चरवाहों की झलक आपको एक लम्हे में रोक देंगे। देवदार की खामोशी को चीरती वंदे भारत की रफ्तार- तकनीक और प्रकृति का अद्भुत संगम जल्द ही आपको देखने को मिलेगा।

इंजीनियरिंग का कमाल- मेक इन इंडिया के तहत इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (ICF) में बनी यह ट्रेन आधुनिक तकनीक और सुविधाओं से लैस है, जो बिजली सी चलती है। मगर सुरक्षित और आरामदायक सफर की मिसाल है। इसका सफर हर भारतीय को गर्व से भर देगा।

क्यों खास है कश्मीर वाली वंदे भारत ?- यह वंदे भारत एक्सप्रेस विश्वसनीयता, सुरक्षा और यात्रियों के आराम को सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक तकनीक एवं उन्नत सुविधाओं से युक्त है। इस वंदे भारत ट्रेन को कश्मीर घाटी की कठिन जलवायु परिस्थितियों में सुगम यात्रा प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। जिससे अब हर मौसम में कश्मीर घाटी तक पहुंचना आसान होगा और वंदे भारत एक्सप्रेस की शुरुआत, क्षेत्र में यात्री सेवाएँ एवं पर्यटन अनुभव बेहतर बनाएगी।

ज़ीरो से नीचे तापमान, फिर भी कनेक्टिविटी बरकरार- जम्मू-कश्मीर जैसे सर्द मौसम वाले क्षेत्र में सुचारू रेल संचालन सुनिश्चित करने के लिए इस वंदे भारत ट्रेन में विशेष तकनीकी सुविधाएँ प्रदान की गई हैं-

सिलिकॉन हीटिंग पैड- यह वॉटर और बायो-टॉयलेट टैंकों में पानी को जमने से रोकेंगे। साथ ही, इनमें ओवरहीट प्रोटेक्शन सेंसर लगे हैं, जो यह सुनिश्चित करता है कि शून्य या माइनस तापमान में भी रेल संचालन सुचारू रूप से हो।

हीटेड प्लंबिंग पाइपलाइन- जीरो डिग्री से भी कम तापमान में सेल्फ-रेगुलेटेड हीटिंग केबल्स पानी को जमने से रोकेंगे।

ऑटो-ड्रेनिंग मैकेनिज्म- प्लंबिंग लाइनों में पानी के जमने की समस्या को रोकेगा, जिससे संचालन में कोई बाधा नहीं आएगी।

यात्रा होगी सुगम और सुरक्षित- कश्मीर की कठिन परिस्थितियों में ड्राइवर की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए इस वंदे भारत ट्रेन में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया गया है, जिससे सुगम यात्रा संभव होगी-

एंबेडेड हीटिंग एलिमेंट- फ्रंट लुकआउट ग्लास में लगाए गए यह एलीमेंट सर्द मौसम में विंडशील्ड को डी-फ़्रॉस्ट कर ड्राइवर को क्लियर विज़न प्रदान करेंगे, जिससे सुरक्षित व सुगम ट्रेन संचालन हो सकेगा।

एंटी-स्पॉल लेयर- बर्फबारी या आंधी जैसे कठिन मौसम के दौरान यह लेयर ड्राइवर को सुरक्षित ट्रेन के संचालन में सहायता करेगा।

सुरक्षित और आरामदायक वर्क एनवायरनमेंट- ट्रेन को कठिन मौसम परिस्थितियों से निपटने के लिए स्पेशल रूप से डिज़ाइन किया गया है।

भारतीय रेल की न्यू-एज टेक्नोलॉजी- इस वंदे भारत ट्रेन के सुचारू संचालन और यात्रियों के आराम के लिए कई तकनीकी सुविधाएं सुनिश्चित की गई हैं-

एयर ड्रायर सिस्टम हीटिंग- अत्याधिक ठंड में एयर ब्रेक सिस्टम की दक्षता बनाए रखेगा। साथ ही, हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग (HVAC) डक्ट्स द्वारा यात्रियों की आरामदायक यात्रा सुनिश्चित की गई है।

5 kVA ट्रांसफॉर्मर- ट्रेन के महत्वपूर्ण घटकों के सुचारू संचालन और ठंडे मौसम में उनकी दक्षता बनाए रखने के लिए इसे अंडरफ्रेम में विशेष रूप से स्थापित किया गया है।

पूर्ण वातानुकूलित कोच- सेमी-हाई-स्पीड क्षमताओं (160 किमी प्रति घंटे) से लैस होंगे, जिससे तीव्र और समयबद्ध यात्रा संभव होगी।

आधुनिक सुविधाएँ- चौड़े गैंगवे, स्वचालित प्लग डोर, मोबाइल चार्जिंग सॉकेट, इंफोटेनमेंट सिस्टम और सीसीटीवी जैसी सुविधाएँ यात्रियों के अनुभव को सुगम बनाएंगी।

यात्रा में विकास का अनुभव- कश्मीर घाटी में वंदे भारत एक्सप्रेस की शुरुआत रेल यात्रा में एक ऐतिहासिक बदलाव का प्रतीक है। यह सेवा सभी मौसमों में निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगी, जो बर्फबारी, कठोर ठंड और कठिन पर्वतीय चुनौतियों को पार कर सुगम यात्रा का भरोसा दिलाती है।

आधुनिक सुविधाओं और जलवायु- विशिष्ट अनुकूलन के साथ, यह ट्रेन यात्रियों को बेहतर यात्रा अनुभव प्रदान करेगी। कश्मीर घाटी को सम्पूर्ण देश से अभूतपूर्व रूप से जोड़ने के साथ वंदे भारत एक्सप्रेस भौगोलिक और आर्थिक अंतर को भी समाप्त करेगी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 11 अप्रैल 2025

कैबिनेट मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन हेतु विशेष ट्रेन का किया रवाना

800 से ज्यादा श्रद्धालु ओंकारेश्वर-महाकालेश्वर करेंगे दर्शन

पूर्वति कांग्रेस सरकार ने बंद कर दी थी योजना भाजपा सरकार बनते ही पुनः हुआ चालू

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आयोजित विशेष तीर्थ दर्शन योजना अंतर्गत आज सूरजपुर रोड रेलवे स्टेशन से उज्जैन, ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर के लिए सूरजपुर के 288 तीर्थ यात्रियों को लेकर विशेष ट्रेन रवाना की गई। समाज कल्याण, महिला एवं बाल विकास विभाग की मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने तीर्थ दर्शन के लिये रवाना हो रहे श्रध्दालुओं से संवाद भी किया। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना को लेकर मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में शुरू की गई इस योजना से विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों को लाभ मिल रहा है, जिन्हें आर्थिक या अन्य कारणों से तीर्थयात्रा का अवसर नहीं मिल पाता था। यह योजना प्रदेशवासियों की आस्था सशक्त होगी। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल तीर्थ स्थलों की यात्रा कराना नहीं, बल्कि नागरिकों को उनकी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना भी है।

इस अवसर पर स्टेशन परिसर में श्रद्धालु यात्रियों के साथ जनप्रतिनिधियों और आम नागरिकों की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने तीर्थयात्रियों से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह योजना राज्य सरकार की संवेदनशीलता और वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सम्मान को दर्शाती है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार बुजुर्गों की आस्था और आध्यात्मिक आकांक्षाओं को साकार करने के लिए कटिबद्ध है।

तीर्थ यात्रियों के दल में शामिल अनेक वरिष्ठ नागरिकों ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की सुविधा न केवल आध्यात्मिक लाभ प्रदान करती है, बल्कि वरिष्ठ नागरिकों को मानसिक शांति भी देती है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत 60 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों को देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा कराई जा रही है। इस चरण में 10 अप्रैल से 13 अप्रैल तक तीर्थयात्री उज्जैन के प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग और अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों के दर्शन करेंगे।

राज्य शासन द्वारा यात्रा के दौरान भोजन, आवास, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाएं नि:शुल्क रूप से उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे वरिष्ठ नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

इस अवसर पर विधायक प्रेमनगर श्री भुलन सिंह मरावी , नगर पालिका अध्यक्ष , पार्षद-गण, जिला पंचायत सदस्य श्री बाबूलाल सिंह मरापो, श्रीमती कुसुम, सुश्री मोनिका, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष, सदस्य, अन्य जनप्रतिनिधि,एस डी एम श्रीमती शिवानी जायसवाल, समाज कल्याण विभाग अधिकारी एवं कर्मचारी व अन्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

महुआ शराब बिक्री करने वाला आरोपी गिरफ्तार

चकरभाठा(विश्व परिवार)। मामले का विवरण इस प्रकार है कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बिलासपुर रजनेश सिंह द्वारा जिला बिलासपुर में अवैध रूप से महुआ शराब बिक्री करने वालों पर कड़ी कार्यवाही करने के व्यापक दिशा निर्देश दिए गए हैं। उक्त निर्देश के पालन में थाना चकरभाठा क्षेत्र अंतर्गत स्थित ग्राम नगाराडीह में एक व्यक्ति बिक्री करने हेतु अवैध रूप से महुआ शराब रखने की सूचना पर थाना प्रभारी उत्तम साहू द्वारा थाना चकरभाठा से प्रधान आरक्षक 505 निर्मल सिंह ठाकुर के हमराह स्टाफ टीम गठित कर तत्काल ग्राम नगाराडीह में आरोपी के घर रेड कार्यवाही कराया गया जहां पर आरोपी लाल बहादुर कुर्रे के कब्जे से प्लास्टिक के जरीकेन में भरा हुआ 45 लीटर महुआ शराब मिला जिसे विधिवत कब्जे में लेकर आरोपी के विरुद्ध आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के तहत कार्यवाही कर रिमांड पर माननीय न्यायालय पेश किया गया है। प्रकरण की उक्त कार्यवाही में वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में थाना प्रभारी चकरभाठा उत्तम कुमार साहू, प्रधान आरक्षक निर्मल सिंह, आरक्षक भागवत चंद्राकर, गोवर्धन शर्मा, मनीष साहू, प्रवीण पंकज, एवं महिला आरक्षक गोपालनी, का विशेष योगदान रहा।

उरगा पुलिस ने जुआ खेलने के आरोप में 3 को गिरफ्तार किया

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतिश ठाकुर के मार्गदर्शन पर जिले में जुआ, सट्टा, मादक पदार्थों एवं अवैध गतिविधियों के विरुद्ध लगातार सख्त कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में 08 अप्रैल को थाना उरगा पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम उमरेली स्थित शराब भट्ठी के पास कुछ व्यक्ति खेत में जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश तिवारी के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा तत्काल घेराबंदी कर दबिश दी गई। दबिश के दौरान 3 कथित आरोपियों को मौके से गिरफ्तार किया गया, जबकि कुछ अन्य मौके से फरार बताये जा रहे हैं। गिरफ्तार कथित आरोपियों के विरुद्ध धारा 13 जुआ अधिनियम के तहत विधि-सम्मत कार्यवाही की गई है। इस कार्यवाही में उनि राजेश तिवारी, सउनि परमेश्वर गुप्ता, प्रआर 407 बसंत कुमार भैना, आरक्षक 464 प्रेमचंद साहू, 463 नरेश टांडेल, 730 महासिंह सिदार, 106 अजय यादव, 103 वीरेंद्र अनंत, 862 पुष्पेंद्र खूंटे, 708 श्याम एक्का, 64 झंगल सिंह मांझवार, 37 चिरंजीव प्रताप, 146 दौलत कैवर्त एवं सैनिक 94 ध्वजा कश्यप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर विशेष आयोजन

कोरबा(विश्व परिवार)। नवकार महामंत्र जैन शासन में अत्यंत प्रतिष्ठित एवं पवित्र मंत्र है, जिसे श्महामंत्रश् की उपाधि प्राप्त है। यह मंत्र जैन धर्म की पहचान भी माना जाता है। नवकार महामंत्र का स्मरण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति जैन धर्म का प्रतिनिधि माना जा सकता है। इस महामंत्र में अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु दृ इन पाँच परम पूज्य आत्माओं को श्रद्धा के साथ नमन किया जाता है। जैन समाज में यह मंत्र इतनी गहराई से समाहित है कि छोटे-छोटे बच्चे भी इसका नित्य उच्चारण करते हैं। ज्ञात हो कि जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) द्वारा दिनांक 9 अप्रैल 2025 को विश्व नवकार महामंत्र दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस पुण्य अवसर पर आध्यात्मिक और धार्मिक लाभ की भावना से सकल जैन धर्मसंघ एवं अन्य जैन अनुयायी इस अभियान से भावपूर्वक जुड़े हैं। कोरबा स्थित पुराना बस स्टैंड जैन भवन तथा बुधवारी जैन मंदिर में भी सकल जैन समुदाय ने इस दिवस पर उत्साहपूर्वक भाग लिया और सामूहिक रूप से नवकार महामंत्र का जाप कर इस दिन को अत्यंत पावन बनाया।

कोरबा पुलिस की अपराध समीक्षा बैठक सम्पन्न

कोरबा(विश्व परिवार)। आगामी त्योहारों के मद्देनजर जिले में शांति, कानून-व्यवस्था एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक कोरबा श्री सिद्धार्थ तिवारी द्वारा आज समस्त राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना-चैकी प्रभारियों की क्राइम मीटिंग आयोजित की गई। बैठक में एसपी श्री तिवारी ने अवैध गतिविधियों पर कठोर कार्रवाई, लंबित अपराधों के शीघ्र निराकरण, यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखने तथा संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारियों को आम जनता की शिकायतों एवं समस्याओं पर संवेदनशीलता, गंभीरता एवं जिम्मेदारी के साथ कार्य करने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि त्योहारों के दौरान जनसंवाद बढ़ाकर शांति व्यवस्था बनाए रखना सभी की प्राथमिकता होनी चाहिए।

रसोई गैस और डीजल-पेट्रोल की दरें बढने के साथ उपभोक्ताओं की जेब काटने की तैयारी

महंगाई का ग्राफबढने से आम लोगों की जेब पर असर

कोरबा(विश्व परिवार)। पेट्रोलियम कंपनियों द्वारा हाल में ही गैस सिलेंडर और तेल की कीमतों में की गई बढ़ोतरी के बाद स्थानीय स्तर पर होटल व्यवसाय के साथ-साथ खोमचा कारोबारी और छोटी दूरी के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की सुविधा उपलब्ध कराने वाला वर्ग टैरिफबढ़ाने की सोच रहा है। उनका तर्क है कि सरकारें कीमत बढ़ाने पर आमादा है तो हम नुकसान क्यों झेलें। उधर अर्थतंत्र के क्षेत्र में काम करने वाले प्रतिनिधियों का कहना है कि किसी भी स्तर पर महंगाई का ग्राफ बढने से कुल मिलाकर आम लोगों की जेब पर असर पडना ही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने भले ही पेट्रोल और डीजल पर एक रुपए प्रति लीटर की राहत देने की कोशिश की, लेकिन केंद्र द्वारा एक्साइज ड्यूटी बढ़ा दिए जाने से वह राहत टिक नहीं सकी। इसका नतीजा यह हुआ कि उज्ज्वला योजना, एपीएल, और व्यावसायिक सिलेंडर सभी की कीमतें लगभग 50 रुपए तक बढ़ा दी गईं। तेल और गैस की कीमतों में वृद्धि का असर केवल व्यक्तिगत उपभोग तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यापक बाजार व्यवस्था को प्रभावित करता है। खाद्य व्यवसाय से जुड़े लोगों को अब अपने उत्पादों के दाम बढ़ाने पड़ सकते हैं ताकि वे उत्पादन लागत को संतुलित कर सकें। होटल, रेस्टोरेंट, ढाबे जैसे छोटे व्यवसायों को यह सबसे पहले प्रभावित करता है क्योंकि उनका सीधा संबंध गैस और डीजल पर आधारित सेवाओं से है। आखिरकार इस पूरी श्रृंखला का सबसे बड़ा भार आम उपभोक्ता पर आता है। उन्हें न केवल रसोई गैस महंगी मिलती है, बल्कि बाजार में खाने-पीने की वस्तुएं, आवश्यक सेवाएं, और यातायात लागत भी महंगी हो जाती है। मध्यम वर्ग और गरीब वर्ग के लिए यह सीधा आर्थिक दबाव बन जाता है। अर्थशास्त्र से जुड़े विशेषज्ञ मानते हैं कि सरकारों के पास अभी भी कोई सुदृढ़ नीति या स्थायी समाधान नहीं है जो महंगाई पर नियंत्रण कर सके। महंगाई से लडने के लिए नीतिगत सुधार, नवाचार, और सुधारित सब्सिडी प्रणाली की जरूरत है। तेल और गैस की कीमतों में वृद्धि एक ऐसा कारक है जो देश की अर्थव्यवस्था, बाजार व्यवहार, और जनसामान्य की क्रय शक्ति तीनों को प्रभावित करता है।

दुर्ग की घटना का विरोध : जिला कांग्रेस कमेटी कोरबा ने किया गृहमंत्री का पुतला दहन

कोरबा(विश्व परिवार)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार जिला कांग्रेस कमेटी कोरबा द्वारा दुर्ग में 6 वर्षीय मासूम बच्ची के साथ हुए दुराचार, हत्या तथा प्रदेश में महिलाओं के साथ लगातार हो रही अपराध की संवेदनशील घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने व राज्य की लचर कानून व्यवस्था के कारण गृहमंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर टी. पी. नगर स्थित कांग्रेस कार्यालय के सामने गृहमंत्री का पुतला दहन कार्यक्रम आयोजित किया। जिला अध्यक्ष नत्थूलाल यादव ने कहा कि देश में जब कन्या भोजन हो रहा था तब छत्तीसगढ़ के दुर्ग में एक मासूम बच्ची के साथ अनाचार हो गया और उसकी हत्या हो गयी। राज्य में भारतीय जनता पार्टी सरकार बनने के बाद बेटियां, बहने, मातायें सुरक्षित नहीं हैं। लगातार दुराचार की घटनाये बढ़ रही है। दुर्ग में एक छोटी बच्ची कन्या भोजन खाने गयी थी उसके साथ दुराचार हो गया व फिर हत्या हो गयी। अपराधी बेलगाम हो गये हैं उनमें कानून का भय नही है। पूर्व महिला जिला अध्यक्ष सपना चैहान ने कहा कि रोज हत्याये, लूट, बलात्कार हो रहे है। सरकार महिलाओं को सुरक्षित वातावरण देने में नाकाम है। पुतला दहन के दौरान राजेंद्र सिंह ठाकुर, कुसुम द्विवेदी, कृपाराम साहू, मुकेश राठौर, सुखसागर निर्मलकर, पालू राम साहू, प्रदीप जायसवाल, रामगोपाल कुर्रे, रामगोपाल यादव, अविनाश बंजारे, मनक साहू, गौरी चैहान, लक्ष्मी महंत, मुन्नी नायक, सुभाष राठौड़, व्यास नारायण श्रीवास, बसीर खान सहित कांग्रेस के अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

जंगली हाथी ने तोड़ा चार मकान-धान किया चट

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के कटघोरा वन मंडल केंदई रेंज में दंतैल हाथी ने उत्पात मचाते हुए ग्राम फुलसर, रोदे और कोदवारी में 4 मकानों को तोड़ दिया। घर के भीतर रखे धान को खा गया। घटना में एक बीमार महिला बाल-बाल बच गई। वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर हाथी को जंगल की ओर खदेड़ा। बताया जा रहा हैं की इस क्षेत्र में 18 हाथियों का झुंड घूम रहा है। जानकारी के अनुसार ग्राम फुलसर निवासी धनराज सिंह नामक व्यक्ति अपने परिवार के साथ घर में सो रहा था। रात के समय अचानक दंतैल हाथी पहुंचा और उसने उत्पात मचाते हुए मिट्टी की दीवार को तोड़ दिया। हाथी के आने की आहट सुनकर कमरे में सो रही बीमार महिला को किसी तरह बाहर निकाला गया। हाथी ने एक बोरी धान को सूंड से निकालकर खा गया। यहां से हाथी ग्राम पोड़ी खुर्द के खड़पड़ी पारा पहुंचा। जहां उसने तीन लोगों के मकान को तोड़ दिया है । जिसमें इतवार साय धनुवार, बुदेश्वरी बाई धनुवार और अमरलाल शामिल हैं। तीनों ने ही भागकर अपने परिवार की जान बचाई। झुंड में शामिल हाथी नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं। लेकिन दंतैल हाथी अलग होकर ग्रामो में पहुंचने लगा है। रेंजर अभिषेक दुबे ने बताया कि हाथी को जंगल की ओर खदेड़ा गया है। साथ ही निगरानी भी की जा रही है। ग्रामीणों को जो भी नुकसान हुआ है उसका क्षति का आंकलन कर रहे हैं।

सुशासन तिहार नगर पंचायत विश्रामपुर में आया शिकायतों का अंबार

एक दिन में आया 87 शिकायते सबसे ज्यादा बिजली पानी राशन कार्ड की

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-छत्तीसगढ़ में सुशासन तिहार कार्यक्रम के तहत मंगलवार से नगर पंचायत बिश्रामपुर के लोगों ने अपनी समस्याओं की निराकरण के लिए आवेदन देना शुरू किया, लोगों में काफी उत्साह है कि समाधान पेटी में डाले गए समस्याओं का समाधान शासन स्तर पर जल्द ही किया जाएगा छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में पूरे प्रदेश के नगरीय निकायों के साथ सभी ग्राम पंचायत मुख्यालय एवं जिला कार्यालय में भी सुशासन तिहार प्रारंभ कर समाधान पेटी स्थापित कराया गया है नगर पंचायत बिश्रामपुर क्षेत्र अंतर्गत समस्याओं की निराकरण हेतु आवेदन देने का सिलसिला शुरू हो गया है जिसमें मुख्य रूप से प्रधानमंत्री आवास पानी बिजली राशन कार्ड पाइपलाइन मरम्मत पेंशन जैसी मूलभूत सुविधाओं के संबंध में आवेदन प्राप्त हो रहे हैं 8 अप्रैल से 11 अप्रैल तक पहले चरण में आवेदन लिए जाएंगे सुशासन तिहार तीन चरणों में आयोजित होगा नगर पंचायत विश्रामपुर क्षेत्र अंतर्गत कुल तीन स्थानों पर समाधान पेटी रखकर आवेदन प्राप्त किया जा रहे हैं जिसमें आजाद ग्राउंड स्थित सामुदायिक भवन ग्लोब स्कूल विश्रामपुर नगर पंचायत कार्यालय जिसमें पहले दिन कुल 87 आवेदन प्राप्त हुए जिसमें मांग 75 एवं शिकायत के 12 आवेदन शामिल है उसी प्रकार आज दूसरे दिन कुल 63 आवेदन प्राप्त हुए जिसमें मांग 58 एवं 5 शिकायत संबंधी है

पत्रकारों के हिन्दू नव वर्ष ईद मिलान समारोह में अरशद खान, सैय्यद रज़ा, मो. तनवीर तन्नू भाई का हुआ शसम्मान, वैदिक ग्रुप की एम डी सलमा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया

रायपुरर। भारतीय पत्रकार महासंघ, रायपुर (छ.ग.) आयोजक वैदिक ग्रुप के तत्वावधान में आज दिनांक 08 अप्रैल 2025 को वृन्दावन हाल, रायपुर में आयोजित हिन्दू नववर्ष एवं ईद मिलन समारोह में सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक श्री पुरंदर मिश्रा जी एवं मैनेजिंग डायरेक्टर सैय्यद सलमा ने संस्था, अवाम ए हिन्द सोशल वेलफेयर कमेटी के संस्थापक मोहम्मद सज्जाद खान को उनके द्वारा वर्षों से किये जा रहे जनहित एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में योगदान देने तथा उल्लेखनीय कार्यों के लिए मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर उत्तर विधायक श्री पुरंदर मिश्रा रायपुर प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष बृजेश चौबे रायपुर प्रेस क्लब के पूर्व महासचिव संदीप पुराणिक आज की जनधरा स्थानीय संपादक विवेक, मिश्रा साजिद, शकील, सुधीर,आज़ाद तंबोली पीसीरथ , अब्दुल हमीद (दैनिक लोक किरण), आबिद मेमन, सहित सभी पत्रकार साथी मौजूद रहे इस सम्मान समारोह में सबसे पहले सम्मान श्री अरशद खान को समाज सेवा के लिए दिया गया दूसरा सम्मान, सैयद रजा को समाज सेवा के लिए दिया गया सम्मान पाने वाले फिरोज खान मुतवल्ली जनता कॉलोनी मस्जिद गुढ़ियारी बब्बू अली साहब मुतवल्ली कुंद्रा पारा गुढ़ियारी हाजी शेख इस्माइल गफूर मौदहा पारा मस्जिद को दिया गया भिलाई से अनीता वर्मा निधि चंद्राकर अध्यक्ष उड़ान आत्मनिर्भर जमाते इस्लामी से मोहम्मद उबैद , मोहम्मद तनवीर तन्नू भाई को भी इनाम से नवाजा गया महिला समूह के लिए आशा शर्मा को सम्मान किया गया इस अवसर पर वैदिक ग्रुप की एमडी सैय्यद सलमा ने सभी का आभार व्यक्त किया और उन्होंने कहा सभी त्योहार आपसी भाईचारा की सीख देता है और हमें इसे मिलकर एक होकर सबके सुख-दुख बाटकर ऐसे पवित्र त्योहार को मनाना चाहिए हमारे छत्तीसगढ़ की भाईचारा हमेशा ऐसे ही कायम रहे वैदिक ग्रुप का हमेशा यह प्रयास रहा है कि हम सभी के बीच जाकर उनके सुख-दुख को बाटकर उनकी खुशियों में शामिल होकर उनके साथ हर त्यौहार को मनाया जाए चाहे वह किसी भी जाति धर्म समुदाय के क्यों ना हो आज हमें शिक्षा रोजगार के साथ-साथ हर वक्त पर हर किसी की मदद करनी चाहिए. उन्होंने बताया कि मो. सज्जाद खान जी ने हर धर्म-हर कौम को मानवता के एक सूत्र में बांध कर मानव सेवा कर, कौमी एकता, भाईचारा कायम कर समाज में सामाजिक सद्भाव पैदा किया है। साथ ही मो. सज्जाद खान अपनी संस्था के माध्यम से विगत 28 वर्षों से नि:स्वार्थ समाज सेवा के क्षेत्र में अपने दायित्वों को निर्वाह कर जीवन को मानव सेवा के लिए समर्पित करते हुए जनहित एवं सामाजिक कार्य करते हुए आ रहे हैं, जिसमें भूखों की भूख मिटाने के लिए निशुल्क भोजन सेवा, गरीब निर्धनों को कपड़ा, बीमारों के इलाज, गरीब बच्चियों के विवाह में मदद इत्यादि शामिल हैं। इस सम्मान के लिए संस्थापक, मो. सज्जाद खान ने धन्यवाद करते हुए कहा कि बहुत खुशी की बात है यदि कोई भी संस्था सामाजिक सद्भाव, भाईचारा से देश और समाज कल्याण के क्षेत्र में लगातार कार्य करती हैं, तो ऐसे सामाजिक संस्थाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने वाले लोगों की हौसला अफ्जाई हो सके और आने वाले दिनों के लिए और भी बेहतर दीनदुखियों, जरूरतमंदो, देश ओर समाज के लिए कार्य कर सके।

इस अवसर पर संस्था के संस्थापक, मो. सज्जाद खान के साथ जुबैर खान, राजेंद्र शर्मा, अरहम खान एवं वरिष्ठ पत्रकारगण उपस्थित रहे।

संपादकीय

सोशल मीडिया से बढ़ रहे रिश्तों के कत्ल

हर मस्जिद के नीचे मंदिर तलाशना उचित नहीं.....

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ नेता भैया जी जोशी का औरंगजेब की कब्र से संबंधित बयान महत्त्वपूर्ण है और इसके विशिष्ट मायने भी हैं। उन्होंने कहा है कि इस विषय को अनावश्यक रूप से उठाया गया है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी विवाद को उठाने की जबरिया कोशिश को निर्थक बताते हुए कहा है कि औरंगजेब की कब्र एक संरक्षित स्मारक है इसलिए इसे तोड़ने या हटाने का कोई अचित नहीं है, लेकिन औरंगजेब जैसे संप्रदायवादी कट्टर शासक का महिमामंडन सहन नहीं किया जाएगा। इससे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत भी कह चुके हैं कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर तलाशना उचित नहीं है। अगर संघ प्रमुख और संघ के वरिष्ठ नेता की ओर से इस तरह के बयान आते हैं तो वे अकारण नहीं है। संघ एक संजीदा, लक्ष्य बद्ध और दूरगामी संकल्पों वाला हिन्दू संगठन है जिसकी कार्यप्रणाली और वैचारिक अभिव्यक्ति में उच्छृंखलता, अभद्रता या मर्यादाविहीनता लक्षित नहीं होते। उसकी निष्ठा हिन्दुओं को विशेष लक्ष्य के प्रति सचेत बनाकर संगठनबद्ध करके भारतीय राष्ट्र के उस सांस्कृतिक ढांचे में डालना है जिसे वह राजनीतिक तौर पर भारतीय संस्कृति के नाम से अभिहित करता है। उसका एक बड़ा लक्ष्य भारतीय हिन्दुओं को क्षुद्र मतभेद भुलाकर विराट हिन्दू जाति के रूप में संगठित करना है जिससे उसे वांछित राजनीतिक शक्ति प्राप्त हो, लेकिन जब हिन्दुओं को संघ से इतर संगठन जिन्हें प्रायः संघ का अनुषांगिक संगठन कहा जाता है, अप्रत्याशित घटनाओं को अंजाम देते हैं, अनावश्यक विभाग खड़ा करते हैं। यानी नफरती बयान देते हैं तो ये तत्काल ही संघ की बदनामी का कारण बन जाते हैं और संघ की आलोचनाओं के घेरे में आ जाता है जिससे उसके भविष्यगामी उद्देश्य में बाधा पहुंचती है। इसलिए संघ चाहता है कि हिन्दू संगठन या हिन्दू समूह ऐसे विवादों को जन्म न दें जिससे सामाजिक या सांप्रदायिक वैमनस्य बढ़ता हो, कानूनी संकट खड़ा होता हो और इन्हें लेकर संघ या भाजपा को सफाई देनी पड़ती हो। संघ इसीलिए समय-समय पर फुटकर हिन्दू समूहों की आलोचना करता है। वैसे भी यह संघ की जिम्मेदारी बनती है कि वह इस तरह के समूहों को नियंत्रण में रखे और उन्हें कानून-व्यवस्था विरोधी तत्वों के रूप में उभरने न दे।

योगेंद्र योगी

रिपोर्ट होने वाले आंकड़े डरावने हैं और इन्हीं आंकड़ों को सच करके जब मुस्कान, साहिल, प्रगति, राकेश रौशन न जाने ऐसे कितने ही नाम और ऐसी कितनी ही तस्वीरें सामने आती हैं तो एहसास करा जाती हैं कि अब मुहब्बत उस एहसास का नाम नहीं रहा जो कभी हर दिल में रहा करता था विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम की सीख देने वाले भारत जैसे अध्यात्म और शांति की धरा वाले देश में बढ़ती भौतिक विलासिता की चकाचौंध और सोशल मीडिया का जिंदगी में बढ़ता दखल, पारिवारिक-सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर रहा है। संबंधों में तकरार और फिर नृशंस तरीके से हत्या जैसे मामलों ने देश को झकझोर कर रख दिया है। मेरठ की मुस्कान ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर अपने पति सौरभ राजपूत की हत्या कर दी। ऐसे ही मुजफ्फरनगर की पिंकी ने अपने आशिक के लिए अपने पति अनुज को जहर पिलाकर मार दिया। रिश्तों में हत्या का ऐसा ही प्रकरण बेंगलुरू में देखने को मिला, वहां के हुलीमावु क्षेत्र में एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की हत्या करके उसकी बॉडी को सूटकेस में भर दिया। देश के अलग-अलग शहरों में हो रही ऐसी हत्याओं ने देश की जनता को पूरी तरह से हिलाकर रख दिया। आखिर यह सिलसिला कहां जकर थमेगा? इन घटनाओं ने सोचने-समझने के लिए मजबूर कर दिया है कि आखिर यह देश किस दिशा में जा रहा है? पिछले कुछ वक्त से देश के अलग-अलग हिस्सों से ऐसी खबरें आ रही हैं, जिनमें पति पत्नी का और पत्नी पति का कत्ल कर देती है। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2023 में दुनिया भर में कुल 51 हजार 100 महिलाओं और लड़कियों का कत्ल हुआ है। इनमें से 60 फीसदी के करीब कत्ल महिलाओं या लड़कियों के अपने पार्टनर, पति या फैमिली मेंबर ने किया। एक रिपोर्ट कहती है कि देश भर में हर साल औसतन 225 लोगों को उनकी पत्नियां कत्ल कर देती हैं और लगभग 275 पत्नियां अपने पति के हाथों मारी जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में हर ग्यारहवें मिनट में एक महिला या लडक़ी का कत्ल होता है। इनमें से औसतन हर रोज 140 महिलाओं या लड़कियों का कत्ल उनके घर के अंदर होता है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन और लंदन स्कूल ऑफ हाइजिन

एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड साउथ एफ्रिकन मेडिकल रिसर्च काउंसिल की रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2022 में दुनिया भर में कुल 48 हजार 800 महिलाओं और लड़कियों के कत्ल हुए थे और इनमें से भी 60 फीसदी से ज्यादा कत्ल पार्टनर, पति या फैमिली मेंबर ने ही किए थे। वर्ष 2022 में ऐसे अपराधों के मामलों में अफ्रीका पहले नंबर पर था और एशिया दूसरे नंबर पर। ऐसे अपराधों में अब 2023 में एशिया पहले नंबर पर है और अफ्रीका दूसरे नंबर पर है। आंकड़ा कहता है कि पार्टनर पति या रिलेशनशिप में दुनिया भर में जितने कत्ल होते हैं, उसकी 58 फीसदी शिकार महिलाएं या लड़कियां होती हैं। लेकिन चौंकाने वाला आंकड़ा यह भी है कि इसी पार्टनर और रिलेशनशिप की वजह से 42 फीसदी पुरुषों का भी कत्ल होता है। अर्थात यह अंतर ज्यादा नहीं है। ब्रिटिश मेडिकल जनरल लेनसेट में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 60 फीसदी महिलाओं के कत्ल मौजूदा या फिर पूर्व पार्टनर की वजह से होते हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में महिलाओं के कत्ल का सबसे ज्यादा खतरा उन्हीं के मौजूदा या पूर्व पार्टनर से ही होता है। जबकि पूर्व या मौजूदा महिला पार्टनर के हाथों पुरुषों के कत्ल का प्रतिशत सिर्फ साढ़े 6 फीसदी है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के मुताबिक देश में हर साल कितने पति अपनी पत्नी का या पत्नी अपने पति का कत्ल करती हैं। एनसीआरबी के 2022 के आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि इश्क और रिश्तों में लोग अब जान नहीं देते बल्कि जान लेते हैं। भारत में जिन वजहों से सबसे ज्यादा कत्ल होते हैं, उनमें लव अफेयर और शादी के बाद संबंधों के मामलों में होने वाला कत्ल तीसरे और चौथे नंबर पर आता है। देश में होने वाले हर 10 में से औसतन एक कत्ल किसी न किसी आशिक-माशूक या पति-पत्नी के हाथ से ही होता है। आंकड़ों के मुताबिक पूरे देश में कुल 28 हजार 522 कत्ल के मामले सामने आए। ये तमाम कत्ल 19 अलग-अलग वजहों से हुए। मसलन, निजी दुश्मनी, सांप्रदायिक और धार्मिक वजह, राजनीतिक वजह, डायन प्रथा, जातिवाद, विवाद, या लूट-डकैती। परेशान करने वाली बात यह है कि इन 19 वजहों में से तीसरी और चौथी नंबर पर कत्ल की जो वजह बनी वो इश्क, धोखा, फरेब और शादी के बाद के संबंध थे। 28 हजार 522 कत्ल के कुल मामलों में से कुल 2 हजार 821 कत्ल इसी वजह से हुए। ऐसा नहीं है कि इश्क में पहले कत्ल नहीं हुआ करते थे। पहले भी आशिकों ने हाथों में खंजर या तमंचे उठाए हैं। लेकिन 2010 के बाद से पति-पत्नी, इश्क, बेवफाई और अवैध संबंध की वजह से होने वाले कत्ल की तादाद तेजी से बढ़ी। पिछले 15 सालों के आंकड़ों पर नजर दौड़ाएं तो साफ पता चलता है कि जैसे-जैसे सोशल मीडिया का चलन बढ़ा, पति-पत्नी के रिश्ते, शादी के बाद के संबंध और इश्क और खूनी होता चला गया। आंकड़ों के हिसाब से 2010 से 2014 के दरम्यान लव अफेयर और संबंधों की वजह से होने वाले कत्ल का प्रतिशत 7 से 8 फीसदी था। लेकिन 2015 से 2022 के दरम्यान ये बढ़कर 10 से 11 फीसदी हो गया। ये गिनती लगातार बढ़ती जा रही है। एनसीआरबी के डेटा के मुताबिक 2022 में देशभर में खुदकुशी के कुल 17 हजार 924 केस दर्ज हुए थे, जिनमें से अकेले शादी से जुड़े मामलों में 8 हजार 204 पति या पत्नी ने खुदकुशी की। जबकि इश्क के चलते 7 हजार 692 प्रेमी जोड़ों में से किसी एक ने खुदकुशी कर ली। इसके अलावा अवैध संबंधों की वजह से भी 855 लोगों ने खुदकुशी की। एनसीआरबी के अलावा नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के एक आंकड़े के मुताबिक 4 फीसदी शादीशुदा महिलाओं ने यह माना है कि वो अपने पति को शारीरिक तौर पर चोट पहुंचाती हैं। इसी तरह स्टडी ऑफ इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पॉपुलेशन साइंस (आईआईपीएस) की एक रिपोर्ट के मुताबिक नौकरीपेशा महिलाएं जो पैसे कमाती हैं और मोबाइल का इस्तेमाल करती हैं, अपने पति से ज्यादा झगड़ती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं की जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है वो अपने पति से ज्यादा झगड़ने लगती हैं। जबकि पति के मामले में यह उल्टा है। पति की उम्र जैसे-जैसे बढ़ती है, वो बीवियों से झगड़ा कम करने लगते हैं। आईआईपीएस की यह रिपोर्ट यह भी कहती है कि एकल परिवार में पति-पत्नी के बीच हिंसक लड़ाई ज्यादा होती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हर एक हजार पति में से 29 पति अपनी पत्नियों की हिंसा का शिकार होते हैं। जबकि एकल परिवार में यही आंकड़ा पत्नियों के लिए हर एक हजार में 32 है। वैसे पति पत्नी से जुड़े दर्ज कत्ल के मामलों के एक आंकड़े के मुताबिक 2022 में देशभर में पत्नी के हाथों पति के 220 कत्ल के मामले सामने आए थे। इसी दौरान पति के हाथों पत्नी के कत्ल के 270 से ज्यादा मामले सामने आए। फिलहाल 2025 की तो अभी शुरुआत है। वर्ष 2024 का आंकड़ा एनसीआरबी ने अभी जारी नहीं किया है। लेकिन रिपोर्ट होने वाले आंकड़े डरावने हैं और इन्हीं आंकड़ों को सच करके जब मुस्कान, साहिल, प्रगति, राकेश रौशन न जाने ऐसे कितने ही नाम और ऐसी कितनी ही तस्वीरें सामने आती हैं तो एहसास करा जाती हैं कि अब मुहब्बत उस एहसास का नाम नहीं रहा जो कभी हर दिल में रहा करता था। सवाल यही है कि आखिर हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है। क्या तरक्की और स्वतंत्रता का यही पैमाना है? सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के क्षरण का सिलसिला आखिर कहां जाकर थमेगा, इसके बारे में गहन चिंतन-मनन की जरूरत है।

आलेख

देश में हिंसा के एक ही पैटर्न

अवधेश कुमार

नागपुर की हिंसा ने फिर पूरे देश को भयभीत किया। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का वक्तव्य था कि सीसीटीवी फुटेज से 104 दंगाइयों की पहचान हो गई है, नष्ट की गई संपत्तियों की भरपाई दंगाइयों से की जाएगी और वे जुर्माना नहीं देते तो उनकी संपत्ति जब्त कर उससे क्षतिपूर्ति होगी। वास्तव में 33 से ज्यादा पुलिसकर्मियों का घायल होना, भारी संख्या में वाहनों की तोड़फोड़ या जलाना, जगह-जगह घरों और दुकानों का क्षतिग्रस्त होना पहले से ही संकेत दे रहे थे कि हमले सुनियोजित थे। विधानसभा में मुख्यमंत्री फडणवीस ने बयान भी दिया था कि यह सुनियोजित हमला लगता है। नागपुर पुलिस की प्राथमिकी, अभी तक की छानबीन, सीसीटीवी फुटेज और हिंसा के पैटर्न बताते हैं कि हिंसा तात्कालिक गुस्से की परिणति नहीं, शत-प्रतिशत सुनियोजित थी। तत्कालिक गुस्से में छिटपुट हल्की-फुल्की हिंसा हो सकती है। चेहरे ढंके नकाबपोश हमला करने किसी घटना से त्वरित गुस्से में नहीं दिख सकते। उतनी संख्या में पत्थर कहां से आएंगे? पेट्रोल बम अचानक कैसे तैयार हो गया? विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) और बजरंग दल द्वारा 17 मार्च को औरंगजेब की कब्र हटाने के लिए विरोध प्रदर्शन का आह्वान पहले से था। इनने छत्रपति शिवाजी महाराज चौक पर प्रतीकात्मक कब्र और पुतला जलाया। इसके समानांतर क्या हो रहा था? माइनॉरिटी डेमोक्रेटिक पार्टी का शहर अध्यक्ष फहीम अहमद 50-60 लोगों को लेकर गणोशपेठ पुलिस थाना पहुंचा और लिखित शिकायत दर्ज कराई कि हरे कपड़े पर कलमा लिख कर जलाया जा रहा है। पुलिस ने उसकी शिकायत पर विहिप और बजरंग दल के आठ लोगों पर मामला भी दर्ज किया। बावजूद सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाई गई कि पवित्र कुरान की आयतें जलाई गई हैं, लोगों के घर से निकलने की अपील की गई। सोशल मीडिया पर झूठ फैलाया गया कि हिंसा में दो लोगों की मृत्यु हो गई है। एक सोशल मीडिया अकाउंट बांग्लादेश से मिला है, जिसमें लिखा गया कि यह छोटा दंगा था, इससे बड़ा दंगा आगे होगा। उसके बाद फहीम खान थाने से आकर 400-500 लोगों, जिनके हाथों में हथियार थे, को लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज चौक यानी धरना स्थल पर पहुंच गया। पुलिस द्वारा भीड़ से वापस जाने के आग्रह को अनसुना करते हुए भीड़ भड़काऊ और उकसाऊ नारे लगाने लगी। प्रदर्शनकारियों में शामिल 400-500 लोग कुल्हाड़ियों, पत्थरों, लाठी, रॉड और अन्य ऐसी सामग्रियों को लहरा रहे थे। इसी दौरान भालदारपुरा में पुलिस पर पत्थरों से हमले की भी घटना हुई। सबसे शर्मनाक अंधेरे का लाभ उठा कर महिला पुलिस के साथ छेड़खानी और दुर्व्यवहार था। महिला पुलिस के कपड़े उतारने की कोशिश की गई। गीतांजलि चौक पर भीड़ ने पुलिस वाहनों पर पेट्रोल बम से हमला किया और पुलिस के दो वाहनों में आग लगा दी। गंजीपुरा में फ्लाईओवर निर्माण के लिए खड़ी दो क्रेन को पेट्रोल बम से आग लगा दी गई। ड्यूटी पर मौजूद पुलिस अधिकारियों पर पत्थरों और घातक हथियारों से हमलाकर घायल कर दिया गया। देखते-देखते महल, कोतवाली, गणोशपेठ और चिटिनस पार्क समेत शहर के विभिन्न इलाकों से हिंसा की सूचना आने लगी। यहां कुछ और सच्चाई को सामने लाना आवश्यक है। नागपुर के सीए रोड, भालदारपुरा, गंजी पेठ, हंसापुरी, गांधी बाग, चिटनवीस पार्क, आदि क्षेत्र में ज्यादातर दुकानें पुरानी बाइक एवं ऑटो स्पेयरपार्ट्स की हैं। सभी दुकानें एक समुदाय की हैं। आश्चर्यजनक रूप से सोमवार को दुकानें सुबह से ही बंद थीं। मोबिनपुरा में सामान्यतया 150 गाड़ियां खड़ी रहती थीं। एक गाड़ी नहीं थी वहां। क्या यह बिना योजना के संभव है? फिर केवल हिन्दू घर एवं दुकान ही हिंसा के शिकार थे। पत्थरबाजी में घायल नागपुर के डीसीपी निकेतन कदम ने कहा कि एक घर में कुछ लोग छिप कर पत्थरबाजी कर रहे थे। टीम वहां गई तो दूसरी ओर से 100 से ज्यादा लोगों की भीड़ आई। मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की तो एक ने कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। कई छतों से पत्थर फेंके जा रहे थे। पत्थर छत पर कैसे पहुंचे, कुछ तो प्लानिंग थी। वाकई इतने घरों में पत्थर पैदा नहीं हो गए। साफ है कि पत्थर पहले से तैयार करके रखे गए थे। साफ दिखती सुनियोजित हिंसा पर हो रही राजनीति भी डराने वाली है। सच को सच के रूप में समझ कर स्पष्ट न बोला जाए तो परिणाम विनाशकारी होंगे। कोई किसी विषय पर लोकतांत्रिक तरीके से विरोध प्रदर्शन कर रहा है तो उसे मजहब के विरु द्ध प्रचारित करने का अर्थ क्या है? कलमा लिखे हरे चादर जलाए ही नहीं गए। इस तरह के झूठ फैलाने वाले लोगों को इस्लाम के नाम पर भड़का रहे थे।

प्राकृतिक आपदाओं के समक्ष मनुष्य बेबस

योगेश कुमार गोयल

म्यांमार में 28 मार्च को रिक्टर स्केल पर आए 7.7 तीव्रता के भूकंप ने भारी तबाही मचाई। म्यांमार और थाईलैंड में यह 200 साल का सबसे भीषण भूकंप बताया गया। यूनाइटेड स्टेट जियोलॉजिकल सर्वे द्वारा मौतों का आंकड़ा 10 हजार से भी ज्यादा होने की आशंका जताई गई है। भूकंप के झटके थाईलैंड, बांग्लादेश, चीन और भारत तक महसूस किए गए। भूकंप के कारण म्यांमार की दुर्दशा को देखते हुए भारत में भी लोगों के मन में सवाल उमड़ रहे हैं कि कहीं देश के विभिन्न हिस्सों में बार-बार कांपती धरती किसी बड़ी तबाही का सिग्नल तो नहीं है। नेशनल सेंटर ऑफ सिस्मोलॉजी (एनसीएस) के एक अध्ययन में बताया जा चुका है कि 20 भारतीय शहरों तथा कस्बों में भूकंप का खतरा सर्वाधिक है, जिनमें दिल्ली सहित नौ राज्यों की राजधानियां भी शामिल हैं। हिमालयी पर्वत श्रृंखला क्षेत्र को दुनिया में भूकंप के मामले में सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर में जमीन के नीचे दिल्ली-मुरादाबाद फॉल्ट लाइन, मथुरा फॉल्ट लाइन तथा सोहना फॉल्ट लाइन मौजूद है। जहां फॉल्ट लाइन होती है, भूकंप का अधिकेंद्र वहीं बनता है। बड़े भूकंप फॉल्ट लाइन के किनारे ही आते हैं, और दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरी हिमालयन बेल्ट को भूकंप से ज्यादा खतरा है। एनसीएस के पूर्व प्रमुख डॉ. एके शुक्ला के मुताबिक, उत्तर भारत में हिमालयन बेल्ट से ज्यादा खतरा है, जहां 8 की तीव्रता वाले भूकंप आने की शंका है। हालांकि ज्यादा तीव्रता का बड़ा भूकंप आने की आशंकाओं के बारे में वैज्ञानिकों का कहना है कि सटीक अनुमान लगाना संभव नहीं है कि यह कब आ सकता है। दरअसल, भूकंप के सटीक पूर्वानुमान का अब तक न कोई उपकरण है, और न ही कोई मैकेनिज्म। राष्ट्रीय भू-भौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई) के वैज्ञानिक हालांकि बार-बार धरती के कांपने को लेकर अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन उनका कहना है कि भू-जल का गिरता स्तर भी प्रमुख वजह के रूप में सामने आ रहा है जबकि अन्य कारण भी तलाशे जा रहे हैं। वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी, देहरादून तथा आईआईटी, कानपुर भी दिल्ली तथा आसपास के इलाकों का अध्ययन करते हुए एनसीएस की मदद कर रहे हैं। दिल्ली एनसीआर को तो भूकंप के लिहाज से काफी संवेदनशील इलाका माना जाता है, जो दूसरे नंबर के सबसे खतरनाक सिस्मिक जोन-4 में आता है। एक अध्ययन के मुताबिक, दिल्ली में करीब 90 फीसद मकान कंक्रीट और सरिये से बने हैं, जिनमें से 90 फीसदी इमारतें रिक्टर स्केल पर छह तीव्रता से तेज भूकंप को झेलने में समर्थ नहीं हैं। एनसीएस के एक अध्ययन के अनुसार दिल्ली का करीब 30 फीसद हिस्सा तो जोन-5 में आता है, जो भूकंप की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट में भी बताया जा चुका है कि दिल्ली में बनी नई इमारतें 6 से 6.6 तीव्रता के भूकंप को झेल सकती हैं जबकि पुरानी इमारतें 5 से 5.5 तीव्रता का भूकंप ही सह सकती हैं। विशेषज्ञ बड़ा भूकंप आने पर दिल्ली में जान-माल का ज्यादा नुकसान होने का अनुमान इसलिए भी लगा रहे हैं क्योंकि दिल्ली में प्रति वर्ग किमी. में करीब दस हजार लोग रहते हैं, और कोई भी बड़ा भूकंप 300-400 किमी. की रेंज तक असर दिखाता है। भूकंप के झटकों को लेकर दुनिया भर के भूगर्भशास्त्रियों तथा भूकंप विशेषज्ञों का मानना है कि इस समय धरती की टेक्टोनिक प्लेटें खिसक रही हैं, और उन्हीं के कारण इतने भूकंप आ रहे हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक कई बार जब दो टेक्टोनिक प्लेटों के बीच में बनी गैस या प्रेशर रिलीज होता है, तब भी भूकंप के झटके आते हैं। गर्मियों में यह स्थिति ज्यादा देखने को मिलती है। हिमालय में बड़े भूकंप की आशंका जताते हुए वैज्ञानिक कह चुके हैं कि हिमालय पर्वत श्रृंखला में सिलसिलेवार भूकंपों के साथ कभी भी बड़ा भूकंप आ सकता है, जिसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर आठ से भी ज्यादा हो सकती है। भूकंप वैज्ञानिकों के अनुसार 8.5 तीव्रता वाला भूकंप 7.5 तीव्रता के भूकंप के मुकाबले करीब 30 गुना ज्यादा शक्तिशाली होता है। भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समक्ष हालांकि मनुष्य बेबस है क्योंकि ये आपदाएं बगैर चेतावनी के आती हैं, जिससे इनकी मारक क्षमता कई गुना बढ़ जाती है लेकिन हम ऐसे प्रबंध तो कर ही सकते हैं, जिनसे भूकंप आने पर नुकसान की आशंका न्यूनतम रहे। जापान ऐसा देश है जहां सबसे ज्यादा भूकंप आते हैं, लेकिन उसने भवन निर्माण और बुनियादी सुविधाओं का ऐसा मजबूत ढांचा विकसित कर लिया है, जिससे भूकंपों के कारण कम नुकसान होता है। रिक्टर स्केल पर 5 तक की तीव्रता वाले भूकंप को खतरनाक नहीं माना जाता लेकिन यह भी क्षेत्र की संरचना पर निर्भर करता है। इसीलिए विशेषज्ञों का कहना है कि नई इमारतों को भूकंपरोधी बना कर तथा पुरानी इमारतों में अपेक्षित सुधार कर जान-माल के बड़े नुकसान से बचा जा सकता है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट में भी बताया जा चुका है कि दिल्ली में बनी नई इमारतें 6 से 6.6 तीव्रता के भूकंप को झेल सकती हैं जबकि पुरानी इमारतें 5 से 5.5 तीव्रता का भूकंप ही सह सकती हैं। विशेषज्ञ बड़ा भूकंप आने पर दिल्ली में जान-माल का ज्यादा नुकसान होने का अनुमान इसलिए भी लगा रहे हैं क्योंकि दिल्ली में प्रति वर्ग किमी. में करीब दस हजार लोग रहते हैं, और कोई भी बड़ा भूकंप 300-400 किमी. की रेंज तक असर दिखाता है। भूकंप के झटकों को लेकर दुनिया भर के भूगर्भशास्त्रियों तथा भूकंप विशेषज्ञों का मानना है कि इस समय धरती की टेक्टोनिक प्लेटें खिसक रही हैं, और उन्हीं के कारण इतने भूकंप आ रहे हैं।

नई टैरिफ जंग में भारत कैसे उभरेगा?

डा. जयंतीलाल भंडारी

भारत की बढ़ती घरेलू मांग, नए व्यापार समझौते, रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन, बढ़ता खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और बढ़ता कृषि व खाद्य प्रसंस्करण निर्यात और घरेलू आर्थिक घटक भारत के लिए मजबूत और असरकारक आर्थिक हथियार के रूप में उपयोगिता देते हुए दिखाई देंग दो अप्रैल को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिकी विनिर्माण को बढ़ावा देना और व्यापार असंतुलन को दूर करने के लिए मित्र और विरोधी दोनों तरह के देशों पर नए पारस्परिक टैरिफ (रेसिप्रोकल टैरिफ) लगाए हैं। भारत पर 26 फीसदी टैरिफ लगाया गया है। ट्रंप के नए टैरिफ ऐलान से दुनिया भर के बाजारों और शेयर बाजारों में हाहाकार मच गया है। यद्यपि भारत में सरकार ने संसद में ट्रंप की नई टैरिफ नीति के मद्देनजर घरेलू उद्योगों के संरक्षण की बात कही है, लेकिन अब देश के उद्योग जगत के द्वारा टैरिफ संरक्षण की बजाय वैश्विक प्रतिस्पर्धा व अनुसंधान व विकास (आरएंडडी) पर ध्यान दिया जाना होगा। गौरतलब है कि वित्त वर्ष 2024 में भारत के कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी करीब 18 फीसदी रही, जो करीब 77.5 अरब डॉलर थी, निर्यात की ऐसी ऊंचाई अमेरिका को भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बनाती है। अतएव ट्रंप के टैरिफ से भारत के कई प्रमुख निर्यात क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं। इनमें टेक्सटाइल और परिधान, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, रत्न और आभूषण, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि उत्पाद शामिल हैं। लेकिन टैरिफ के प्रभाव से अन्य देशों की तुलना में भारत कम प्रभावित होगा। एसबीआई रिसर्च के अनुसार भारत के कुल निर्यात पर प्रभाव 3.3.5 प्रतिशत तक सीमित रह सकता है। इसमें कोई दोमत नहीं हैं कि ट्रंप के टैरिफ जंग में भारत के लिए घरेलू मांग, घरेलू आर्थिक घटक नए व्यापार समझौते और रिकार्ड खाद्यान्न उत्पादन व रिकॉर्ड खाद्य प्रसंस्कृत उत्पादों का निर्यात कारगर हथियार दिखाई दे रहे हैं। नि:संदेह देश में बढ़ते मध्यम वर्ग के कारण खपत भारत में दिखाई दे रही है। देश के उपभोक्ता बाजार को देश का मध्यम वर्ग नई आर्थिक ताकत दे रहा है। देश में आर्थिक सुधारों के साथ ऊंची विकास दर और शहरीकरण की ऊंची वृद्धि दर के बलबूते भारत में मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी है। हाल ही में प्रकाशित दि राइज ऑफ मिडल क्लास इंडिया नामक डॉक्यूमेंट के मुताबिक भारत के मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या तेजी से बढ़कर वर्ष 2021 में लगभग 43 करोड़ हो गई है और

वर्ष 2047 तक यह संख्या बढ़कर 102 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। इस वर्ग को 5 लाख से 30 लाख रुपए की वार्षिक आय वाले परिवारों के रूप में परिभाषित किया गया है। निश्चित रूप से भारत के मध्यम वर्ग की मुठ्ठियों में बढ़ती क्रय शक्ति और जेन जी एवं मिलेनियल्स की आंखों में उपभोग और खुशहाली के जो सपने दिखाई दे रहे हैं, उनके कारण जहां दुनिया के कई देश भारत से आर्थिक और कारोबारी संबंध बढ़ाने के लिए तत्पर हैं, वहीं दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने नामी ब्रांडों के साथ भारत के बहुआयामी उपभोक्ता बाजार में नई रणनीतियों के साथ दस्तक दे रही हैं। निश्चित रूप से भारत डोनॉल्ड ट्रंप की टैरिफ मार से बचने और वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए नए वैश्विक व्यापार समीकरणों के साथ आगे बढ़ रहा है। हाल ही में 26 से 29 मार्च तक नई दिल्ली में भारत और अमेरिका के वरिष्ठ व्यापार प्रतिनिधियों ने दोनों देशों के बीच 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंचाने के प्रस्तावित व्यापार समझौते की रूपरेखा और संदर्भ की शर्तों को अंतिम रूप देने के लिए सार्थक वार्ता की है। जहां एक ओर सरकार तेजी से मुक्त व्यापार समझौतों (एफ्टीए) और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों की रणनीति के साथ आगे बढ़ रही है। अब जहां नॉर्वे, हंगरी, ग्वाटेमाला, पेरू, चिली के साथ भी शीघ्र ही व्यापार समझौते की बातचीत शुरू की जानी चाहिए, वहीं अब भारत के द्वारा ओमान, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इजरायल, भारत गल्फ कंट्रीज काउंसिल के साथ भी एफ्टीए को शीघ्रतापूर्वक अंतिम रूप देने की डगर पर तेजी से आगे बढ़ा जाना होगा। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि जिस तरह पांच साल पहले कोरोना से जंग में देश के खाद्यान्न भंडार देश के हथियार बन गए थे, उसी प्रकार इस समय अमेरिका के टैरिफ की मार के साथ-साथ शुल्क व गैर शुल्क बाधाओं को कम करने से होने वाली किसी भी प्रकार की हानि को कम करने के मद्देनजर देश में रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन और रिकॉर्ड खाद्य प्रसंस्करण उत्पाद एक मजबूत हथियार दिखाई दे रहे हैं। चूंकि इस वर्ष 2025 में वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न उत्पादन में कमी के आकलन प्रस्तुत हुए हैं, ऐसे में ट्रंप के टैरिफ से भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में होने वाली 3 से 3.5 फीसदी हानि की बहुत कुछ भरपाई खाद्यान्न और कृषि प्रसंस्करण के निर्यात से भी की जा सकेगी। निश्चित रूप से देश में बढ़ता खाद्यान्न उत्पादन और मजबूत होती ग्रामीण आर्थिकी देश की आर्थिक शक्ति बन गई है। नि:संदेह ऐसे मजबूत आर्थिक आधार के बावजूद हमें ट्रंप की टैरिफ चुनौतियों के साथ वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार नीति में अनिश्चितता, अंतरराष्ट्रीय बाजार में जिंसों के दाम और वित्तीय बाजार में अस्थिरता तथा विदेश में व्याप्त आर्थिक निराशावाद के प्रति भी सतर्क रहना होगा।

भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक पर भव्य शोभा यात्रा, भक्तों ने त्रिवेणी जैन तीर्थ सेक्टर-6 में मंगल अभिषेक और शांति धारा की

भिलाई (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक पर भव्य शोभा यात्रा के साथ भक्तों ने भगवान महावीर स्वामी के मंगल अभिषेक और शांति धारा त्रिवेणी जैन तीर्थ सेक्टर-6 में किया।

आज जैन मिलन जैनट्रस्ट के तत्वाधान में भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याण महोत्सव का भव्य शोभा यात्रा के साथ जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया जहां भगवान महावीर स्वामी के 2551 वीर संवत कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर आज श्री त्रिवेणी जैन तीर्थ सेक्टर 6 में 1008 भगवान महावीर स्वामी के 37 इंच अष्टधातु की प्रतिमा के मंगल अभिषेक भक्तों ने किया जहां शांति धारा का सौभाग्य प्रदीप प्रमोद अरुण अक्षत दीक्षा साधना सुनीता आशा जैन बाकलीवाल परिवार एवं अष्टधातु की प्रतिमा पर शांति धारा ज्ञानचंद बाकलीवाल निशांत जैन भारत जैन एवं सभा स्थल पर . संदेश कासलीवाल अखिलेश जैन ने वरुण जैन जिनेंद्र जैन सुरेंद्र अमित जैन आदि के साथ शांति धारा किया। अभिषेक के पश्चात आज भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक अवसर पर जैन ध्वज जैन भवन में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महावीर प्रकाश बहुत सारे कामिनी देखते रहते हैं निगोदिया एवं हुकुमचंद ओसवाल के साथ जैन मिलन अध्यक्ष मुकेश जैन जिनेंद्र जैन संजय चतुर निर्मल कोचर कमल जैन भागचंद जैन राजेश मारुति प्रभात जैन प्रदीप जैन बाकलीवाल गौतम टाटिया सुकुमाल जैन के साथ जैन मिलन जैन ट्रस्ट जैन महिला क्लब त्रिवेणी बहु मंडल के सदस्य की उपस्थिति में मंगल गान के साथ ध्वजारोहण कार्यक्रम किया।

आज भारी गर्मी में त्रिवेणी जैन तीर्थ से बच्चों के द्वारा जैन ध्वज महिलाओं की उपस्थिति में युवाओं के साथ णमोकार महामंत्र का जयकारा लगाते हुए बैंड के साथ शोभायात्रा निकाली गई जिसमें दो पालकी में भगवान महावीर स्वामी के अष्टधातु की प्रतिमा को जैन धर्म के सैकड़ो युवाओं ने अपने कंधों पर जिसमें आनंद कोचर प्रशांत जैन महावीर टाटिया भावेश भाई साह दिनेश मारुति संजीव कासलीवाल जिनेंद्र जैन सुनील जैन संजीव जैन निशांत जैन सिंपी जैन राजेश जैन अनुपम जैन सुनील जैन महेंद्र बेगानी सुनील जैन मुकेश जैन प्रदीप जैन विपिन जैन बारी-बारी से लेकर पालकी को विराजमान कर पैदल जैन ध्वज लेकर भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा परमो धर्म और जियो और जीने दो कि जयकारा के साथ त्रिवेणी जैन तीर्थ से गुरुद्वारा सेक्टर 6ड्ड मार्केट होते हुए मोहनलाल बाकलीवाल भवन पहुंचे जहां श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन सभा. मोहनलाल बाकलीवाल की स्मृति भवन सेक्टर 6ड्ड मार्केट में पहुंचे।

इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी के श्रीफल अर्पण करते हुए नमन किया समिति के अध्यक्ष महावीर प्रकाश निकोटिया महासचिव प्रदीप जैन बाकलीवाल विपिन जैन प्रवीण छाबड़ा संजीव कासलीवाल संतोष जैन आदि की उपस्थिति में जैन समाज की गौरव नैनिका कासलीवाल को भरतनाट्यम नित्य एवं एवं कश्वी छाबड़ा को. छत्तीसगढ़ में शतरंज खेल पर उपलब्धि हासिल करने के लिए प्रगति महिला मंडल के साथ आशीर्वाद देते हुए समान पत्र दिया। बैंड बाजे के साथ शोभायात्रा सेक्टर 06 मार्केट से सेक्टर 6 मार्केट मैं मुकेश जैन के निवास के पास भगवान की आरती भक्तों ने किया। तत्पश्चात शोभा यात्रा जैन भवन प्रवेश की जहां भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याण पर भक्तों ने अभिषेक और शांति धारा किया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में जैन समाज के लोग. की उपस्थिति में भगवान को बालक रूप में पालकी में बिठाकर सैकड़ो लोगों ने पालने में झूला झुलाया। अभिषेक पश्चात मिलन चर्चा एवं मिलन भोज हुआ। **-प्रदीप जैन बाकलीवाल**

सामाजिक सांस्कृतिक-सेवा के आयोजनों के साथ मना भगवान महावीर स्वामी का 2624 वॉ जन्म कल्याणक

दुर्ग (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति दुर्ग इस वर्ष भगवान महावीर का 2624 वॉ जन्म महोत्सव 4 अप्रैल से 10 अप्रेल तक मनाया गया, जिसमें सामाजिक सांस्कृतिक एवं सेवा के विभिन्न कार्य इन दिनों में आयोजित किए गए। गुरुवार की सुबह 8 बजे श्वेतांबर मंदिर एवं दिगंबर मंदिर से भगवान का रथ गांधी चौक मोती कंपलेक्स होते हुए मारवाड़ी स्कूल पहुंचा जहां विधि विधान से श्वेतांबर समाज के लोग मारवाड़ी स्कूल में तथा दिगंबर समाज के लोग कस्तूरबा बाल मंदिर में विधि विधान के साथ भगवान महावीर स्वामी की पूजा अर्चना की पूजा अर्चना के पश्चात वहीं से भव्य शोभायात्रा प्रारंभ हुई, जो माना होटल गुजराती धर्मशाला फरिश्ता काम्पलेक्स स्टेशन रोड भाजपा कार्यालय शनिचरी बाजार होते हुए सदर जैन मंदिर एवं दिगंबर जैन मंदिर में भव्य शोभायात्रा का समापन हुआ।

भगवान महावीर का 2624 वां जन्म कल्याणक महोत्सव मैं जैन समाज के सदस्यों का अभूतपूर्व उत्साह देते ही बन रहा था क्या बच्चे क्या महिलाएं क्या बुजुर्ग वर्ग क्या युवा वर्ग सभी एक साथ मिलकर शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। भगवान महावीर के 2624 में जन्म महोत्सव की शोभायात्रा में इतनी बड़ी संख्या में भीड़ पहली बार देखने को मिली जैन समाज के सभी वर्ग के लोग बच्चे महिला युवक युवतियों जैन समाज के विभिन्न संगठन युवा संगठन बालिका संगठन महिला संगठन ने हर्ष और उल्लास के वातावरण में इन 7 दिनों के सभी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लिया और सभी कार्यक्रमों को अभूतपूर्व सफलता के साथ संपादित किया। राजा बाफना की भक्ति गीतों ने समां बांधा शोभा यात्रा को राजा बाफना के लयबद्ध गीत संगीत की शानदार प्रस्तुति ने शोभा यात्रा को चार चांद लगा दिया। युवा समुदाय भक्ति गीतों पर थिरकते हुए भगावान महावीर के जयघोष के साथ इस शोभायात्रा ने नया इतिहास रच दिया।

जिला चिकित्सालय परिसर में फल वितरण एवं कृष्ण गौशाला छतागढ़ में गायों को गुण एवं सब्जी खिलाने का कार्य जैन समाज के लोगों ने संपन्न किया इस कार्यक्रम में हर्षिका संभव जैन लाभार्थी परिवार थे। इसी तरह जिला चिकित्सालय परिसर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें श्री संजय जैन संजय बोहरा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ तथा मरीज को फल वितरण भी किया गया जिसमें गौतम श्री श्रीमाल परिवार का विशेष सहयोग रहा। भंडारा लोगों ने भरपेट भोजन किया दोस्त यार ग्रुप पिछले 8 वर्षों से कर रहा है या आयोजन- जैन समाज के सदस्य ने पिछले 8 वर्षों से लगातार महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर दोस्त यार ग्रुप दुर्ग। विशाल भंडारे का आयोजन पुराना बस स्टैंड दुर्ग में करते आ रहा हैं। जिसमें आम जनता ने भंडारे में भरपेट भोजन ग्रहण किया दोपहर 1:00 बजे से प्रारंभ हुई हुए भंडारे में लगभग 3000 से अधिक लोगों ने भंडारे का लाभ लिया निर्मल बाफना नरेश वेद सतीश सुराणा भागचंद जैन पंकज जैन अक्षय जैन गोलू ओस्तवाल ओम ढलाडिया दिलीप बारमेचा दिलीप चौरडिया संजय संचेती श्रीपाल श्री श्रीमान त्रिलोक कोठारी दीपचंद नाहर प्रदीपबोथरा ने इस विशाल भंडारे में अपना भरपुर सहयोग दिया।

रात्रि में आयोजित जैन समाज की महिला मंडलों ने भक्ति गीत स्पर्धा में भक्ति गीतों को शानदार श्रृंखला चली। सभी मंडला ने शानदार भक्ति गीतों से समा बांधा और ऐसा मुश्किल हो गया था कि किसी किसे प्रथन घोषित करें किने द्वितीय। यह चिंता का विषय बन गया था निर्णायकों के लिएभक्ति गीत स्पर्धा के निर्णायक के रूप में कुमारी अंजलि जैन अजय बैध उपस्थित थे। वीर सरगम भक्ति प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए जिम प्रथम जिन कुशल मंडल द्वितीय समता बहु मंडल तथा तृतीय शांति विजय मंडल को दिया गया। **-नवीन संचेती**

संक्षिप्त समाचार

कुण्डलपुर में अहिंसा के अवतार भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर निकली शोभायात्रा

कुण्डलपुर (विश्व परिवार)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर, वर्तमान शासन नायक, जन जन के आराध्य, अहिंसा धर्म के प्रणेता, विश्ववंदनीय भगवान श्री महावीर स्वामी जी का जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।इस अवसर पर प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई जो कुंडलपुर कार्यालय से पूज्य बड़े बाबा मंदिर पहुंची। भक्तामर महामंडल विधान, पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांतिधारा, महावीर पूजन, विधान हुआ। श्रीजी का पालना झुलाया गया। दोपहर में शिखर मंदिर से गाजे बाजे के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो नगर भ्रमण करते हुए विद्याभवन पहुंची जहां अभिषेक शांतिधारा पूजन आदि धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर अभिषेक, शांतिधारा, रिद्धि कलश करने का सौभाग्य संजय अशोक देवेंद्र बिजनौर, अक्षय तन्मय सांगली, आशीष विकास शाहपुरा भिटोनी, संजय आयुष जबलपुर, महेंद्र पंकज टोंक, विजय अमित मुंगावली, राजकुमार मनोज टीकमगढ़, शंभू दयाल महेश टोंक, विनोद कुमार झांसी, कुंदनलाल छोटेलाल भोपाल आदि को प्राप्त हुआ।सायंकाल भक्तामर दीप अर्चना एवं पूज्य बड़े बाबा की संगीतमय महाआरती हुई।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप जबलपुर नगर द्वारा आचार्य श्री का पूजन

जबलपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप जबलपुर नगर अपने पंच दिवसीय कार्यक्रम की श्रृंखला में तीसरे दिन दिनांक 8 अप्रैल को 2025 को परंपराचार्य 108 समय सागर जी महाराज की चैतन्य मूर्ति पूजन का आयोजन किया गया। सादे परन्तु गरिमामयी कार्यक्रम प्रात: 8:00 बजे से बड़ा फुहारा में आयोजित किया गया, ग्रुप अध्यक्ष प्रफुल्ल जैन द्वारा जानकारी दी गई कि पूजन के दौरान सामूहिक रूप से अर्घ समर्पण किया गया, इस कार्यक्रम में पुरुष वर्ग सफेद वस्त्र एवं महिलाएं पीली साड़ी में ही उपस्थित थे, सचिव रविज ने बतलाया कि आचार्य श्री की पूजन में ग्रुप के बहुसंख्यक सदस्यों ने पूर्ण सहभागिता देते हुए सामूहिक श्रद्धा और संगठन एकता का परिचय दिया। ज्ञात हो कि दिगंबर जैन सोशल ग्रुप जबलपुर नगर अपने पंच दिवसीय कार्यक्रम की श्रृंखला में चौथे दिवस सामूहिक विश्व नवकार दिवस में सामूहिक रूप से सहभागिता करेगा।

मुख्यमंत्री साय ने महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर उन्हें किया नमन

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने समाज सुधारक, विचारक, लेखक और दार्शनिक महात्मा ज्योतिबा फुले की 11 अप्रैल को जयंती पर उन्हें नमन किया है। श्री साय ने कहा है की ज्योतिबा फुले जी ने महिलाओं व दलितों के उत्थान के लिए कई कार्य किए। दलितों के प्रति भेद-भाव समाप्त कर उन्हें समाज में स्थान दिलाने के लिए महात्मा फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने न सिर्फ महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया, बल्कि अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को भी शिक्षा दिलाई जिससे वे भारत की पहली अध्यापिका बनीं।

महावीर जयंती विशेष : कभी जैन धर्म का प्रमुख केंद्र हुआ करता था धार्मिक नगरी आरंग

आज भी देखें जा सकते हैं जगह जगह पुरावशेष

आरंग (विश्व परिवार)। प्राचीन और पुरातात्विक नगरी के नाम से प्रख्यात नगर आरंग कभी जैन धर्म का भी प्रमुख केंद्र था। नगर में अपनी प्राचीन गौरवशाली इतिहास को स्मरण करा रहे राष्ट्रीय स्मारक जैन धर्म को समर्पित भांडदेवल मंदिर आज भी जन आस्था का केंद्र बना हुआ है। यह पूरे छत्तीसगढ़ में जैन धर्म को समर्पित एक मात्र पूर्ण सुरक्षित मंदिर है। दूर-दूर से यहां सभी धर्मों के लोग आकर प्राचीन इतिहास का स्मरण करते हैं। जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हुए थे। जिनमें से अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी थे। पुरा नगरी आरंग प्राचीन काल से ही जैन समुदाय के लिए आस्था का केंद्र था। आज भी यहां नगर के चारों दिशाओं में जगह - जगह जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं। नगर के कुछ स्थानों पर चौबीस तीर्थंकरों की सुंदर प्रतिमाएं भी है। जिनमें बरमबावा मंदिर, महामाया तालाब किनारे स्थित चौबीस तीर्थंकरों की सुंदर प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं। लंबे समय से प्रतिमाएं खुले में रखे होने के कारण प्रतिमाओं का क्षरण हो रहा है। जिसके संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है। वहीं नगर के शीतला मंदिर, महामाया मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, चंडी मंदिर, नारायणबन मंदिर सहित अनेक स्थानों पर जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं व पुरावशेष देखें जा सकते हैं। नगर के स्वयंसेवी सामाजिक संस्था पीपला वेलफेयर फाउंडेशन इन प्रतिमाओं की संकलन व संरक्षण हेतु लगातार प्रयासरत हैं।वहीं फाउंडेशन के सदस्यों ने महावीर जयंती की शुभकामनाएं दिए हैं।

भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महा महोत्सव मनाया गया

श्रीजी की भव्य रथ यात्रा में गूंजे जियो और जीने दो के नारे

ललितपुर (विश्व परिवार)। सिद्ध क्षेत्र पावागिरि सहित तालबेहट के दोनों जैन मंदिरों में वर्तमान शासन नायक जैन धर्म के 24 में तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2625 वाँ जन्म कल्याणक महा महोत्सव मनाया गया। सुबह से ही मंदिरों में भारी भीड़ उमड़ी, भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक शांतिधारा पूजन विधान के उपरांत भगवान के जन्म कल्याणक की क्रियाएं की गई एवं पालना झुलाया। पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में संजय जैन शास्त्री मुरैना के निर्देशन में भगवान महावीर महामंडल विधान का संगीतमय आयोजन किया गया। दोपहर में श्रीजी की भव्य शोभा रथयात्रा निकाली गई जिसमें तैल चित्रों की झाँकी रथ पर भगवान महावीर स्वामी को लेकर बैठे प्रमुख इंद्र, बग्गी में सवार धर्मध्वजा लेकर धर्मश्रेष्ठी, डी जे बैंड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते हुए पाठशाला परिवार, बहु मण्डल, महिला मण्डल, सत्य-अहिंसा एवं जिओ और जीने दो के नारे लगाते हुए युवा व महिला-पुरुष चल रहे थे। श्रद्धालुओं ने छत्र चढ़ाया, चमर ढोरे। नगर पंचायत अध्यक्ष पुनीत सिंह परिहार, पूर्व नगर अध्यक्ष मुक्ता विजय सोनी एवं समाजसेवी सुनील त्रिपाठी सहित भक्तों ने अपने द्वार को रंगोली से सजाकर श्री जी की मंगल आरती उतारी। शोभा यात्रा प्रमुख मार्गो से होती हुई वासुपूज्य दिगंबर जैन मंदिर से वापस मंदिर जी आयी। जहाँ कलशाभिषेक शांतिधारा एवं फूलमाल का आयोजन किया। रात्रि में महा आरती के उपरांत विशेष कलाकारों के द्वारा महावीर नाटिका प्रस्तुत की गयी। जिसमें पं. विजय कृष्ण, चौधरी ऋषभ कुमार, गजेंद्र जैन, सनत कुमार, जयकुमार, सुमत कुमार, प्रकाश चंद्र परिधान, अनिल जैन, कमल कुमार, डॉ.राजेंद्र जैन घुवारा, देवेंद्र बसार, प्रवीन भंडारी, यशपाल जैन, संतोष कुमार सहित सकल दिगंबर जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा।

मन से, वाणी से, शरीर से अहिंसा का पालन करने पर महावीर जयंती मनाना सार्थक होगी : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

मंदसौर (विश्व परिवार)। सकल जैन समाज के संयोजन में महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक जयंती श्रद्धा विश्वास भक्ति उत्साह पूर्वक पंचम पट्टाधीश दिगंबर जैन आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के सानिध्य में मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में धर्म देशना में आचार्य श्री ने बताया कि श्री आदिनाथ भगवान से लेकर श्री महावीर स्वामी 24 तीर्थंकरों सहित अनेक भव्य आत्माओं ने तप, संयम से शाश्वत सुख मोक्ष को प्राप्त किया है। महावीर जयंती भी जैन समाज को उत्साह पूर्वक श्रद्धा भक्ति से मनाना चाहिए महावीर स्वामी ने अपने प्रवचन, उपदेश और आचरण से आदर्श प्रस्तुत किया है इसके पालन से आपका जीवन धन्य हो सकता है। यह देशना वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने महावीर स्वामी जन्मकल्याणक दिवस पर आयोजित धर्म सभा में दी राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि अहिंसा परमो धर्म का नारा लगाने से अहिंसा की बात नहीं होती है किसी प्राणी का धात करने के साथ बल्कि मन वचन और काय शरीर से भी हिंसा होती है। इस पर अंकुश जरूरी है प्राणी एक इंद्रीय से पांच इंद्रीय तक होते हैं और चारों गति के प्राणी इसमें शामिल है इसलिए मन को अहिंसक बनाना जरूरी है, वाणी भी आपकी अहिंसक होनाचाहिए वाणी ऐसी होना चाहिए जिससे किसी का दिल नहीं दुखी हो भगवान ने अहिंसा का संदेश दिया है इसलिए चार कषाय क्रोध, मान, माया और लोभ पर रोक होना चाहिए अहिंसा शब्द व्यापक है अहिंसा परमो धर्म की सार्थकता इसी में है कि आप जीवन को अहिंसा मय बनाने का प्रयास करे तीर्थंकरों, जिनवाणी ने अहिंसा का संदेश दिया है महावीर जयंती पर अहिंसा का संदेश के साथ संयम, तप, क्षमा रखने से जीवन में उन्नति होती है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में, परिवार में, समाज, नगर में अहिंसा स्थापित करने का प्रयास कर जीवन को सार्थक करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। **-राजेश पंचोलिया**

चांदी के रथ में निकली भगवान महावीर स्वामी की शोभायात्रा, 5 किमी यात्रा को पूरा करने में लगे 5 घंटे

निर्यापक मुनिश्री योगसागर के ससंघ सानिध्य में निकली शोभा यात्रा, मोराजी में हुआ अभिषेक शांति धारा

सागर (विश्व परिवार)। जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2624 वां जन्म कल्याणक महोत्सव सागर नगर में 10 अप्रैल को बडे धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया गया निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में चल समारोह नगर के प्रमुख मार्गों से निकला। मुनि संघ भाग्योदय तीर्थ से जलूस के रूप में निकला जिसमें हजारों लोग शामिल थे गुजराती बाजार में आकर मुख्य जुलूस में शामिल हो गया। पिछले 82 वर्षों से चल रही श्री जी की शोभा यात्रा सुबह 7.15 बजे कटरा स्थित श्री गौराबाई दि. जैन मंदिर से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा कीर्ति स्तंभ, गल्ला मंडी रोड, लच्छू तिराहा, वर्णी कालोनी, गुजराती बाजार पहुँची। वहां पर भाग्योदय से सुभाष नगर, रेल्वे ओवरब्रिज, राहतगढ़ बस स्टैंड, माता मढिया, बाहुबली कॉलोनी, राधातिराहा होकर गुजराती बाजार पहुँची। जहां पर मुनि संघ की भव्य आगवानी हजारों लोगों ने की।

यहां से मुनि संघ के सान्निध्य में शोभा यात्रा लिंक रोड, विजय टाकीज चौराहा, मस्जिद होकर, तीनबत्ती पहुँची हजारों लोगों ने आरती उतारी रंगोली सजाई और पाद प्रच्छालन किया तीनबत्ती से मुनि संघ आहारचर्या के लिए गौराबाई जैन मंदिर पहुंचा। शोभायात्रा तीनबत्ती से कोतवाली, सराफा बाजार, इतवारा बाजार होते हुए मोराजी पहुंची जहां पर श्री जी का अभिषेक और शांति धारा हुई पुन: शोभा यात्रा चकराघाट, कोतवाली, तीनबत्ती होकर गौराबाई मंदिर पहुंची। शोभा यात्रा में विभिन्न मंदिरों के महिला मण्डल द्वारा बनाई गई झांकियां, दिव्य घोष, महिला मंडल ड्रेस कोड में और संस्थाओं के पदाधिकारियो के अलावा सभी महिलाएं और पुरुष पंक्तिबद्ध रूप से साथ चल रहे थे। मुनि संघ की आहारचर्या गौराबाई जैन मंदिर से पड़गाहन सौरभ घड़ी के यहां निर्यापक मुनिश्री योगसागर महाराज की आहारचर्या संपन्न हुई।

इस बार महावीर जयंती पर लोग बहुत उत्साहित थे। जुलूस में पुरुष सफेद वस्त्रों में टोपी लगाकर, सैकड़ों लोग पगड़ी बाँधकर और महिलाएं अपने मंडलों के ड्रेस कोड में शोभा यात्रा में चल रही थीं। महावीर जयंती पर आधारित नाटक का मंचन हुआ।

विधायक शैलेन्द्र जैन भाजपा जिलाध्यक्ष श्याम तिवारी पूर्व विधायक सुनील जैन, कांग्रेस नेत्री निधि जैन, निगम अध्यक्ष वृन्दावन अहिरवार, महेश बिलहरा, संतोष घड़ी, मुकेश जैन ढाना, नेवी जैन, देवेन्द्र जैना, कांग्रेस शहर जिलाध्यक्ष राजकुमार पचौरी, सेवादल अध्यक्ष सिंटु कटारे, प्रकाश पारस, राकेश चच्चा, दिनेश बिलहरा, चक्रेश सिंघई, कपिल मलैया, अनिल नैनधरा, सौरभ खमकुआं, सद्दू कर्रापुर, अजय पारस देवरी, प्रदीप रांधेलिया, श्रेयांश जैन, पार्षद रानी पराग बजाज, आशा जैन, संगीता शैलेश जैन, नरेश यादव, देवेन्द्र फुसकेले, निकेश गुप्ता, अनिल लम्बरदार, जिनेन्द्र गौरझामर, बड़ी संख्या में शहर के प्रमुख राजनैतिक दलों के लोग और जैन समाजसेवी उपस्थित थे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 11 अप्रैल 2025

संक्षिप्त समाचार

अश्लील वीडियो बनाने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया

मुंगेली(विश्व परिवार)। आरोपी आदर्श सिंह के द्वारा पीड़िता से स्नैपचैट बातचीत को परिजनो को भेजने की धमकी देकर डरा धमकाकर पीड़िता का अश्लील विडियो स्नैपचैट के माध्यम से स्क्रीन रिकार्ड कर वायरल करने वाले आरोपी को मुंगेली पुलिस द्वारा गिर. कर ज्युडिशियल रिमाण्ड पर जेल दाखिल। प्रार्थी के द्वारा लिखित आवेदन पेश किया की दिनांक 15.3.2025 को मेरी भाभी के व्हाट्सएप नंबर पर उनकी ननद के द्वारा मेरी लड़की का अश्लील स्नैपचैट वीडियो रिकार्डिंग भेजी थी जिसे देखने के बाद मेरी भाभी ने मुझे घर आकर बताई थी आपकी लड़की का स्नैपचैट वीडियो रिकार्डिंग को कोई वायरल कर दिया है तब पीड़िता से पुछने पर वीडियो के संबंध में तब पीड़िता पुत्री ने मुझे बताया कि 8 मार्च 2023 से वह बैहरसरी निवासी आदर्श सिंह से स्नैपचैट एवं फोन पर बातचीत करती थी तब आदर्श सिंह के द्वारा पीड़िता को स्नैपचैट में बोला कि कपड़ा उतार कर मुझे वीडियो काल करो नहीं करोगी तो स्नैपचैट की बातचीत को तुम्हारे घर वालों को वायरल कर दूंगा बोलकर धमकी देने लगा तब माह अप्रैल/मई माह मे पीड़िता डरकर स्नैपचैट में वीडियो कॉलिंग के माध्यम से अपना आपत्तिजनक विडियो दिखाई थी जिसे वह अपने मोबाइल में स्क्रीन रिकॉर्ड कर सेव कर लिया था और बातचीत करते समय पीड़िता को शारीरिक संबंध बनाने का भी मांग किया था लेकिन पीड़िता द्वारा मना कर दिया गया तो आदर्श के द्वारा पीड़िता को अश्लील गाली गलौज भी किया जाता था तो वह डर से घर में किसी को नहीं बताई थी करीब 2 वर्षों से बातचीत बंद होना बताई है जिसके कारण आदर्श सिंह के द्वारा अब वर्तमान में अपने मोबाइल में पूर्व में सेव किये पीड़िता का स्नैपचैट वीडियो कालिंग आपत्तिजनक विडियो को हमारे परिजनों व दोस्तों को वायरल कर दिया है कि रिपोर्ट पर आदर्श सिंह के विरूद्ध दिनांक 07.04.2025 को अपराध धारा 294,506,354 (क) (1) (द्वद्व) 12 पोक्सो एक्ट एवं 67-बी आईटी एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया मुंगेली पुलिस अधीक्षक, श्री भोजराम पटेल (द्वक्क्र) के द्वारा प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये परिपालन मे अति. पुलिस अधीक्षक मुंगेली सुश्री नवनीत कौर छाबड़ा, अनुविभागीय पुलिस अधिकारी मुंगेली श्री मयंक तिवारी के मार्ग दर्शन पर विवेचना के दौरान प्रार्थी, पीड़िता एवं गवाहो का कथन लेख कर आरोपी का लगातार पता तलाश किया गया, सायबर सेल से तकनीकी माध्यम से आरोपी आदर्श सिंह को हिरासत में लिया गया, आरोपी से पुछताछ करने पर घटना को स्वीकार करने पर आरोपी द्वारा उपयोग में लाया गया मोबाईल को विधिवत जप्त किया गया।

खुलेआम जुआ खेल रहे तीन जुआरी गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश पर एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकनीतिश ठाकुर के मार्गदर्शन मे जिले में जुआ, सट्टा, मादक पदार्थों एवं अवैध गतिविधियों के विरुद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में दिनांक 08.04.2025 को थाना उरगा पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम उमरेली स्थित शराब भट्ठी के पास कुछ व्यक्ति खेत में जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश तिवारी के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा तत्काल घेराबंदी कर दबिश दी गई। दबिश के दौरान तीन आरोपियों को मौके से गिरफ्तार किया गया, जबकि कुछ अन्य मौके से फरार हो गए।

गरियाबंद में भ्रष्टाचार की आंधी, आधिकारी कलेक्शन में मशगूल -शासन प्रशासन बेखबर

गरियाबंद (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले का जिला कार्यालय इन दिनों भ्रष्टाचार का गढ़ बन चुका है। अधिकारी नियम-कानूनों को ठेंगा दिखाते हुए खुलेआम मनमानी कर रहे हैं और उच्च अधिकारी टिफिन पार्टी में मस्त हैं। दर्रापारा कॉलेज से मंगवाई जा रही टिफिन की थाली में सिमट गया है प्रशासनिक जिम्मेदारी का जायका!

जिन अधिकारियों को जिले की व्यवस्था सुधारनी थी, वे जाते-जाते फकलेक्शन अभियानफ में जुटे हैं। शिक्षा विभाग तो पूरी तरह से दलदल में धंसा नजर आ रहा है। शिक्षकों से लाखों की उगाही, अधिकार क्षेत्र से बाहर निकलकर आदेश जारी करना और हर जगह अपने चहेतों को फायदा पहुँचाना – यही बन गया है अब प्रशासनिक रूटीन!

जिला बना भ्रष्टाचार का हॉटस्पॉट- मनमानी आदेशों की बाढ़ आ गई है, और जिले के अफसर आँख मूंदकर उन पर अनुशंसा कर रहे हैं। न नियमों की चिंता, न न्याय की परवाह – सिर्फ सिफारिश, सौदा और सेटिंग। इतना ही नहीं, वायरल हो रहे वीडियो में खुलेआम लेन-देन की बातें सामने आ रही हैं। क्या यह सिस्टम का पतन नहीं?

उच्च न्यायालय की अवमानना तक पहुंचा मामला- शिक्षा विभाग की करतूतों से न्यायालय भी हैरान। एक अधिकारी के खिलाफ अवैध आदेशों के चलते माननीय उच्च न्यायालय की अवमानना की नौबत आ चुकी है। फिर भी जिले के आला अधिकारी चुप हैं – आखिर क्यों?

कस्तूरबा विद्यालय से छात्राएं लापता – जांच में लीपापोती!- हाल ही में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय से दो छात्राएं छात्रावास अधीक्षिका की गैरहाजिरी में रात के अंधेरे में भाग निकलीं। खबर प्रकाशित होने पर हड़कंप मच गया, लेकिन समग्र शिक्षा विभाग ने लीपापोती करते हुए जाँच में झूठी रिपोर्ट बना दी कि बालिकाएं पहले से गायब थीं। डीएमसी अधिकारी अधीक्षिका को बचाने में जुट गए, और एक बार फिर जिला कलेक्टर को भ्रमित करने का खेल शुरू हो गया।

प्रशासन का पतन या सोची-समझी साजिश?- अब बड़ा सवाल ये है कि क्या शासन जानबूझकर इन भ्रष्ट अधिकारियों को खुली छूट दे रहा है? आखिर कौन है वह ताकत, जिसके दम पर ये अधिकारी खुलेआम संविधान और नियमों को रौंदते चले जा रहे हैं?

जनता पूछ रही है ङ्क आखिर कब तक?- गरियाबंद की जनता अब जवाब मांग रही है। आखिर कब तक जिले की छवि को यूँ ही धूल में मिलाया जाता रहेगा? क्या शासन कोई कड़ा कदम उठाएगा या ये भ्रष्टाचार यूँ ही सांय-सांय करता रहेगा?

लखनऊ में आयोजित ऑल इंडिया पुलिस हैंडबॉल चैंपियनशिप में गरियाबंद के चार खिलाड़ियों का चयन

गरियाबंद (विश्व परिवार)। लखनऊ में 7 से 11 अप्रैल तक आयोजित हो रही प्रथम हैंडबॉल ऑल इंडिया पुलिस खेल प्रतियोगिता में देशभर की पुलिस इकाइयों की श्रेष्ठ टीमें हिस्सा ले रही हैं। इस प्रतिष्ठित आयोजन में पुरुष वर्ग में 25 और महिला वर्ग में 12 टीमें भाग ले रही हैं। छत्तीसगढ़ पुलिस हैंडबॉल टीम में गरियाबंद जिले से चार खिलाड़ियों का चयन होना जिले के लिए गर्व का विषय है। पुरुष टीम में आरक्षक मनीष चंद्राकर और टीकम पटेल, तथा महिला टीम में आरक्षक दर्शना यादव और नीलम यादव को शामिल किया गया है।

छत्तीसगढ़ पुरुष हैंडबॉल टीम के कोच प्रमोद रावत और सूरज बहादुर के मार्गदर्शन में खिलाड़ी अपने प्रदर्शन से राज्य और विभाग का नाम रोशन करने को तत्पर हैं।

गरियाबंद जिले के इन खिलाड़ियों के चयन से क्षेत्र में खेल प्रतिभाओं को नई प्रेरणा मिलेगी और पुलिस विभाग में खेलों को लेकर उत्साह बढ़ेगा।

दरभा क्षेत्र में सुशासन तिहार कार्यक्रम का सफल आयोजन

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आज दरभा क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न ग्राम पंचायतों — डिलमीली, टेमरुभाटा, कटेनार, गुमड़पाल, बीसपुर, चन्द्रगीरी, मामड़पाल तथा मुनगा — में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में संचालित सुशासन तिहार कार्यक्रम का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक श्री विनायक गोयल जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे और उन्होंने सक्रिय भागीदारी निभाई। सुशासन तिहार के अंतर्गत जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आमजन तक पहुंचाई गई और विभिन्न शासकीय योजनाओं से संबंधित हितग्राहियों के फार्म भी मौके पर भरवाए गए। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे ज़रूरतमंदों तक पहुँचाना एवं प्रशासन में पारदर्शिता व सहभागिता को बढ़ावा देना है।

सुशासन तिहार जनसेवा, पारदर्शिता और सहभागिता की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो रहा है।

इस अवसर पर क्षेत्र के जनप्रतिनिधि, पंचायत प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रशासनिक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार कार पुल से नीचे गिरी, नाबालिग की मौत

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जिले में एक तेज रफ्तार कार पुल के नीचे गिर गई। हादसे में एक नाबालिग की मौत हो गई। जबकि 5 नाबालिग घायल हैं। इनमें से एक की स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। जिसे मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। बताया जा रहा है कि, अब पुलिस नाबालिग को गाड़ी चलाने देने वाले पिता पर भी एफआईआर दर्ज कर रही है। मामला गीदम थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, गीदम का रहने वाला रुद्र झा (15) अपने 5 नाबालिग दोस्तों के साथ गीदम से बारसूर की ओर घूमने गया था। वाहन में कुल 6 नाबालिग लड़के थे। गाड़ी चलाने वाला भी नाबालिग था। बारसूर जाते समय कार हिरानार में एक पुल के नीचे जा गिरी। इस हादसे में कार में सवार रुद्र की मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरों ने हादसे की जानकारी पुलिस को दी। जिसके बाद जवान मौके पर पहुंचे। सभी घायलों को अस्पताल लाया गया। इनमें 1 की हालत गंभीर है। जिसे जगदलपुर के मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। वहीं, अन्य घायलों का दंतेवाड़ा में ही इलाज जारी है। इस मामले को लेकर गीदम थाना प्रभारी विजय पटेल ने कहा कि, सड़क हादसे में एक की मौत हुई है। जो गाड़ी चला रहा था वो भी नाबालिग है। गाड़ी उसके पिता राजूराम पोयम के नाम से रजिस्टर है। नाबालिग बच्चे को गाड़ी चलाने देना जुर्म है।

प्लम्बेक्स इंडिया 2025: प्लंबिंग,वॉटर और सॅनिटेशन की सबसे बड़ी प्रदर्शनी

नई दिल्ली। दुनिया भर में 1.8 बिलियन से ज़्यादा लोगों को अभी भी सुरक्षित पेयजल नहीं मिल पा रहा है।भारत की लगभग 40ब आबादी गंभीर जल संकट का सामना कर रही है।ये आँकड़े जल प्रबंधन, सॅनिटेशनऔर स्वास्थ्य (वॉश) में प्रभावी समाधानों की तत्काल आवश्यकता को दर्शाते है। प्लम्बेक्सइंडिया 2025, जो 24 से 26 अप्रैल तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित होने वाला है, भारत में प्लंबिंग, सॅनिटेशन और वाटर मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स का सबसे बड़ा कार्यक्रम है, जो भारत के जल संकट को हल करने के समाधानों पर केंद्रित उद्योग के लीडर्स, इनोवेटर्स और पॉलिसी मेकर्स को एक साथ लाएगा। प्लंबिंग और जलसमाधानोंके लिए भारत के प्रमुख प्लेटफार्म के रूप में, प्लम्बेक्स इंडिया 2025 जलसुरक्षाकी दिशा मेंग्लोबल स्तर पर चल रही मुहिम में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम बनने जा रहा है। इस कार्यक्रम में 125 से अधिक प्रदर्शक एक साथ आएंगे, जो वाटर एफिशिएंट सैनिटरीवेयर और सैनिटरी फिटिंग के माध्यम से जल की कमी से निपटने, उपयोग को अनुकूलित करने और बिल्ट एनवायरनमेंट में जल के पुन: उपयोग को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन की गई अत्याधुनिक तकनीकों और उत्पादोंका प्रदर्शन करेंगे। प्लम्बेक्सइंडिया में 15,000 से अधिक बिल्डिंग इंडस्ट्रीके पेशेवर भागलेंगे, जोइसविशालप्रदर्शनी को देखेंगे और इस गेम चेंजिंगआयोजन के साक्षी बनेंगे। डेनमार्क प्लम्बेक्सइंडिया 2025 के लिए पार्टनर कंट्री है और प्लम्बेक्सइंडिया 2025 में प्रदर्शन करने वाली डेनिश कंपनियां प्रभावी जल प्रबंधन को बढ़ाने के उद्देश्य से अत्याधुनिक प्रोद्योगिकियोंका प्रदर्शन करेंगी। बेहतर प्लमबिंग के माध्यम से वॉश लक्ष्यों को सशक्त बनाना- अच्छी प्लंबिंग सिर्फ़ पाइप और फिक्स्चर के बारे में नहीं है; यह सुरक्षित पानी कोसुनिश्चित करने, स्वच्छता को बढ़ावा देने और सुधार करने के बारे में है। ये वॉश (जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य) लक्ष्यों की आधारशिला है। स्वच्छ पानी देने वाली और वेस्टवाटरका प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने वाली प्लंबिंग सिस्टम्स, वॉटरबोर्न बीमारियों को कम करने, सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और यह सुनिश्चित करने में सीधे योगदान देती हैं जिससे स्वच्छ, पीने योग्य पानीउपलब्धता में कोई भी पीछे न छूटे। प्लंबेक्सइंडिया 2025 में, ये मुद्देचर्चा के केंद्र में होंगे क्योंकि इंडस्ट्री के लीडर इस बात पर चर्चा करेंगे कि प्लंबिंग में इनोवेशन कैसे जल-सुरक्षित भविष्य में योगदान दे सकते हैं।

कमिश्नर डोमन सिंह ने स्वयं आवेदन प्राप्त कर आवेदकों का किया उत्साहवर्धन

जगदलपुर(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार मंगलवार को सुशासन तिहार 2025 के प्रथम चरण के तहत ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में आवेदन पत्र प्राप्त करने की शुरुआत हुई। जिसमें अपनी समस्या-शिकायत निराकरण के प्रति लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला। इस दौरान कमिश्नर बस्तर संभाग श्री डोमन सिंह ने बस्तर जिले के जगदलपुर विकासखण्ड के नगरनार तथा माड़पाल में ग्रामीणों से आवेदन पत्र प्राप्ति का जायजा लिया और आवश्यक दिशा-निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिए। उन्होंने इस मौके पर नगरनार एवं माड़पाल के आवेदन प्राप्ति स्थल पर स्वयं आवेदकों से आवेदन प्राप्त कर सम्बन्धित आवेदकों रतनी बाई एवं फूलमनी अमदिया का उत्साहवर्धन किया, साथ ही ड्यूटीरत कर्मचारियों से पंजी में आवश्यक प्रविष्टि करवाने के उपरांत पावती देने कहा। वहीं ग्रामीणों को जरूरत के अनुरूप आवेदन पत्र लिखने

के लिए सहायता देने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए। कमिश्नर ने इस दौरान सुशासन तिहार में सबकी सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु उपस्थित पंचायत पदाधिकारियों और अन्य लोगों को प्रोत्साहित किया। कमिश्नर ने अपने भ्रमण के दौरान सुशासन तिहार के तहत आवेदन पत्र प्राप्ति स्थलों पर आम लोगों के बैठने की व्यवस्था हेतु छाया, दरी और पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए। वहीं आम जनता को सुशासन तिहार के बारे में अवगत कराने के लिए मैदानी अमले के जरिए प्रचार-प्रसार किए जाने कहा, साथ ही कोटवारों के माध्यम से मुनादी करवाने के निर्देश दिए। इस मौके पर सीईओ जिला पंचायत श्री प्रतीक जैन ने बताया कि जिले में सुशासन तिहार को लेकर लोगों में भारी उत्साह है और आवेदकों से आवेदन पत्र प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है। आवेदन पत्र प्राप्ति हेतु कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने सहित नियमित तौर पर मॉनिटरिंग के लिए भी ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। सुशासन तिहार के उद्देश्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए दीवार लेखन, बैनर-पोस्टर के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। वहीं शहरी क्षेत्रों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के जरिए नागरिकों को जानकारी दी जा रही है। ग्रामीण इलाकों में कोटवारों के माध्यम से मुनादी करवाया जा रहा है और हाट-बाजारों में भी प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इस दौरान अवगत कराया गया कि नगरनार में 59 तथा माड़पाल में 21 आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं।

नेशनल लोक अदालत के संबंध में हुई बैठक

नारायणपुर(विश्व परिवार)। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोण्डागांव किरण चतुर्वेदी एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोण्डागांव गायत्री सायके आदेशानुसार अपर सत्र न्यायाधीश नारायणपुर हरेंद्र सिंह नाग, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नारायणपुर कुमारी प्रतिभा मरकाम, रिटेनर अधिवक्ता चन्द्र प्रकाश कश्यप के द्वारा जिला न्यायालय परिसर नारायणपुर के न्याय सदन में नगरपालिका परिषद अधिकारी, दूरसंचार विभाग अधिकारी नारायणपुर एवं समस्त बैंकों के शाखा प्रबंधकों के साथ नेशनल लोक अदालत को सफल बनाने हेतु 09 अप्रैल को एक महत्वपूर्ण बैठक हु ई, जिसमें आगामी 10 अप्रैल को आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत के संबंध में चर्चा करते हुए नगरपालिका परिषद में लंबित जल कर, दुकान कर, मकान कर, संपति कर,अन्य कर से संबंधित प्रकरण एवं दूरसंचार विभाग के बिल वसूली से संबंधित प्रकरण तथा समस्त बैंकों के प्री-लिटिगेशन प्रकरणों को नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक संख्या में आपसी राजीनामा के माध्यम से निराकरण करने की समीक्षा की गई।

अक्षर पटेल को दादागिरी दिखाना पड़ा महंगा, पहले ही ओवर में कप्तान की निकल गई हेकड़ी!

बेंगलुरु (विश्व परिवार)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान अक्षर पटेल को होशियारी दिखाना महंगा पड़ गया। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के 24वें मैच में अक्षर पटेल ने टॉस जीतने के बाद पहले गेंदबाजी का फैसला किया था। दिल्ली के कप्तान ने पारी के दूसरे ही ओवर में गेंदबाजी का जिम्मा संभाल लिया, लेकिन उनकी ये रणनीति फेल हो गई। दिल्ली के लिए मिचेल स्टार्क ने पहला ओवर किया था और सिर्फ 7 रन खर्च किए थे, लेकिन अक्षर पटेल के कारण विराट कोहली और फिल साल्ट को हाथ खोलने का मौका मिल गया।

दरअसल अक्षर पटेल के ओवर की पहली ही गेंद पर विराट कोहली ने चौके के साथ शुरुआत की। हालांकि, इसके बाद दूसरी गेंद पर अक्षर ने वापसी की और कोई रन नहीं दिया। तीसरी गेंद पर विराट कोहली ने एक रन लेकर अपना छोर बदल लिया। इसके बाद फिल साल्ट ने चौथी गेंद पर सिक्स और पांचवीं गेंद पर चौका जड़कर खुद पर से दबाव को उतरा दिया। वहीं आखिरी गेंद पर साल्ट ने 1 रन चुराया।

आरसीबी के खिलाफ नहीं चली अक्षर की दादागिरी

अक्षर पटेल ने अपने पहले ओवर में 16 रन खर्च कर दिए। इसका नतीजा ये हुआ कि विराट कोहली और फिल साल्ट को हाथ खोलने का मौका मिला। ऐसे में तीसरा ओवर करने आए मिचेल स्टार्क के खिलाफ आरसीबी के इन दोनों बल्लेबाजों ने मिलकर 30 रन कूट दिए। इस तरह आरसीबी के खिलाफ जिस तरह की दादागिरी अक्षर पटेल करना चाहते थे वह उन्हीं पर भारी पड़ गया।

धमाकेदार शुरुआत के साथ ही आरसीबी की टीम ने पहले तीन ओवर में अपने 50 रन पूरे कर लिए। हालांकि, इसके बाद दिल्ली कैपिटल्स ने भी जबरदस्त वापसी की। टीम ने शानदार फील्डिंग से पहले फिल साल्ट को रनआउट किया। इसके बाद टीम ने देवदत्त पडिक्कल और फिर विराट कोहली को आउट कर खुद पर से दबाव को हटाने में सफलता हासिल की।

आईपीएल में कभी नहीं देखी होगी मिचेल स्टार्क की ऐसी कुटाई

बेंगलुरु (विश्व परिवार)। आईपीएल 2025 के 24वें मैच में आरसीबी का सामना दिल्ली कैपिटल्स से हो रहा है। इस मैच में आरसीबी की टीम पहले बल्लेबाजी कर रही है। आरसीबी ने पारी की शुरुआत कमाल के अंदाज में की। फिल साल्ट और विराट कोहली ने तेज तर्रार अंदाज में रन बनाना शुरू किया। पारी का दूसरा ओवर लेकर आए कप्तान अक्षर पटेल के ओवर में दोनों बल्लेबाजों ने 16 रन ठोक दिए। इसके बाद पारी का तीसरा ओवर लेकर आए मिचेल स्टार्क तो और बुरे पीटे गए।

आरसीबी की पारी का तीसरा ओवर जैसे ही मिचेल स्टार्क लेकर आए उनके ऊपर फिल साल्ट ने पहली ही गेंद से हल्ला बोल दिया। साल्ट ने इस ओवर की पहली गेंद पर लॉन्ग ऑन के ऊपर से एक जोरदार छक्का लगाया। वहीं अगली गेंद पर उन्होंने चौका बटोरा। ओवर की तीसरी गेंद पर साल्ट ने एक चौका और मारा। अबतक स्टार्क पहली तीन गेंदों पर तीन बार बाउंड्री खा चुके थे।

फिर ओवर की चौथी गेंद स्टार्क ने नो बॉल फेंकी और साल्ट इस गेंद पर भी चूके नहीं। उन्होंने स्टार्क के खिलाफ एक चौका और ठोका। फिर साल्ट को अगली गेंद पर एक फ्री हिट मिली, जिसपर उन्होंने आंख बंद करके बस बल्ला घुमा दिया। गेंद बल्ले का किनारा लेकर सीधा कीपर के सिर के ऊपर से बाउंड्री पार जा गिरी। वहीं अगली गेंद पर लेग बाए का एक सिंगल साल्ट ने ले लिया और इसके बाद अगली गेंद पर विराट कोहली ने लेग बाए का एक चौका बटोरा। इस तरह से स्टार्क के इस ओवर में कुल 30 रन आ गए।

4 ओवर में ही स्कोर 60 पार

आरसीबी की शुरुआत इस मैच में इतनी तेज थी कि उन्होंने सिर्फ 4 ओवर में 60 रन ठोक दिए। आरसीबी ने पहले 4 ओवर में 62 रन ठोके और उनका सिर्फ एक विकेट गिरा। बदकिस्मती से कमाल की फॉर्म में लग रहे फिल साल्ट रन आउट हो गए और उन्हें 17 गेंदों पर 37 रन बनाकर आउट होना पड़ा। हालांकि इसके बावजूद साल्ट अपना काम कर गए थे।

आईपीएल में सबसे सफल कप्तान फिर संभालेंगे कमान

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। एमएस धोनी चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी करते नजर आएंगे। टीम के कप्तान ऋतुराज गायकवाड इंजरी के कारण IPL के 18वें सीजन से बाहर हो गए हैं। यह जानकारी टीम के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने दी। CSK ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर भी गायकवाड की इंजरी के बारे में बताया।

गायकवाड की कप्तानी में CSK बहुत खराब दौर से भी गुजर रही है। टीम पिछले सीजन प्लेऑफ में जगह नहीं बना सकी और अब शुरुआती 5 मैचों में से 4 हार चुकी है। टीम फिलहाल 10 टीमों में 9वें नंबर पर है।

कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने कहा, जहां तक रिप्लेसमेंट की बात है तो हमारे पास टीम में कुछ ही विकल्प हैं। हमने अभी तक किसी पर फैसला नहीं किया है। धोनी कमान संभालने के लिए तैयार थे। इसलिए उन्हीं का नाम फाइनल किया गया। गुवाहाटी में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मैच के दौरान गायकवाड को तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे की गेंद कोहनी पर लगी थी। उन्होंने मैच में अर्धशतक जरूर जड़ा था, लेकिन चेन्नई मुकाबला हार गई थी।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कबीर नगर, कालोनी, रायपुर में निर्मित **एम.आई.जी.- I फेस-02,** भवन योजना के अंतर्गत, भवनों में से भवन क्रमांक- **एम.आई.जी.-I-73, श्रीमती अनीता गेरेवाल उर्फ प्रतिक्षा गेरेवाल पति श्री वासुदेव गेरेवाल,** को स्वर्वित्तिय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 06.06.2006** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 06.01.2025** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री मनोज कुमार चंद्राकर पिता श्री गया लाल चंद्राकर** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8) मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /19632/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19632
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C00054** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHAILA PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VISHVNATH PAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MANOHAR PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RIKHIRAM PAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 953 दिनांक 09.04.2025
वार्ड का नाम- कैलाश नगर वार्ड
वार्ड क्र. 21 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 21 मांग **पंजी क्र. 285 युआईडी 22985** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगन्नाथ ठाकरे / विश्वनाथ ठाकरे** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अनिता बाई / पुरन लाल रहांगडाले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **09-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर निर्मित एम. आई. जी. स्टैण्डर्ड कालोनी, रायपुर** में भवन योजना के अंतर्गत, भवनों में से भवन क्रमांक **एम.आई.जी. स्टैण्डर्ड -254. श्रीमति माधवी तिवारी पति श्री अतुल कुमार तिवारी को भाड़ाक्रय** / पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 25-11-21** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 27-3-25** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा, की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन 1. **श्री अमित कुमार सिंह** 2. **सुजीत कुमार सिंह पिता श्री स्व. राजेन्द्र प्रसाद सिंह** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8) मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /19625/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19625
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C00090** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUSHMA PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S.L. PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PUSHPENDRA PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S. L. PATEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8) मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /19626/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19626
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C00091** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MINAKSHI PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DINESH PATEL**के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PUSHPENDRA PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S. L. PATEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1) संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19676/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19676
वार्ड का नाम- 15 - ने. कन्हैयालाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 15 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108C0200A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MOHAN CHAND RAJWADE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KEVAL PRASAD** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TOMESHWARI VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O VASUDEV VERMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1) संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19607/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19607
वार्ड का नाम- 03 - संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 03 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR803H00317** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **AMILAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PUNAU RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RANI DEVI SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O ASHOK SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1) संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19678/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19678
वार्ड का नाम- 05 - बंजारी माता मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105D0536A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAVI KUMAR NISHAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GAUTAM NISHAD** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HAJARI LAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O HIRALAL SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि **सामान्य आवास योजनांतर्गत कॉलोनी, दोन्देखुर्द रायपुर** में स्थित **सीनि. एल.आई.जी. भवन क्रमांक-172, श्री देवेश कुमार तिवारी पिता स्व. श्री आर.डी. तिवारी, निवासी-डी-02/21, चौहान ग्रीन वेली जुनवानी, भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.)** को ऑफर / स्ववित्तिय/भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित किया गया था। उनके द्वारा **दिनांक 12.05.2010** को अपने नाम पर लीजडीड/सेलडीड/विक्रय विलेख पंजीयन कराने के उपरांत **13.02.2015** को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को **क्रेता श्रीमती नीरज तिवारी पति श्री धर्मेन्द्र कुमार तिवारी, निवासी सीनि.एल.आई.जी.म.नं.-710, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, दोंदेखुर्द, रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में **दिनांक 10.03.2025** को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में **क्रेता श्रीमती नीरज तिवारी पति श्री धर्मेन्द्र कुमार तिवारी,** द्वारा उक्त भवन को (फ्री होल्ड) पश्चात अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के फ्री होल्ड उपरांत मण्डल अभिलेख में दर्ज के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19378/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19378
वार्ड का नाम- 59 - मोरेश्वर राव गद्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR653E00245** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHAILENDRA AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **N. P. AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **OM NARAYAN DUBEY** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE INDRADEV DUBEY** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **MALMA BIKRINAMA** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1) संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./19487/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 08-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19487
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बप्पा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108A00925** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MAHADEV RAKSEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE RAMESH RAKSEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SANTOSH KUMAR BHASKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GEETA PRASHAD BHASKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19573/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19573
वार्ड का नाम- 60 - चंद्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F00932** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SUNIL KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GAUKRAN PRASAD SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHAKUN BAI SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **SATISH KUMAR SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19597/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19597
वार्ड का नाम- 60 - चंद्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F00104** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHIVCHARAN DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHAGWATI PRASAD** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUNIL DEWANGAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **JEEVAN LAL DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19643/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19643
वार्ड का नाम- 60 - चंद्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652E00036** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ASHOK KUMAR SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE NAGAI SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NILOFAR ILYAS** पिता/पति श्री/श्रीमती **MOHAMMAD ILIYAS** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19670/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19670
वार्ड का नाम- 65 - महामाया मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 65 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR662J00185** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **LAKSHMI BHATTER** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1) JAYANTI W/O RAJA BHATTER, 2) LAKSHYA BHATTER** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAJA BHATTER** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ... / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./19672/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 09-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19672
वार्ड का नाम- 60 - चंद्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652G01006** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SAGIR AHMAD KHAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MARHUM ISMAIL KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. ATIYA SAGEER** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O GULAM MUSTAFA KHAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 951 दिनांक 09.04.2025
वार्ड का नाम-सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 20 मांग **पंजी क्र. 1077 युआईडी 38907** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **शहनाज बानो / अब्दुल जब्बार डगली** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **ललिता कुर्रे / राजेन्द्र कुमार कुर्रे** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **09-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 952 दिनांक 09.04.2025
वार्ड का नाम- मां शीतला वार्ड
वार्ड क्र. 16 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 16 मांग **पंजी क्र. 1497 युआईडी 37956** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **गोपाल शर्मा / स्व. जिउत शर्मा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **रीता जायसवाल / प्रमोद जायसवाल** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **09-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 11 अप्रैल 2025

अरुण साव आज लोक निर्माण विभाग के कार्यों की करेंगे समीक्षा

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री तथा लोक निर्माण मंत्री श्री अरुण साव 11 अप्रैल को लोक निर्माण विभाग के कार्यों की समीक्षा करेंगे। वे राजधानी रायपुर के सिविल लाइन स्थित नवीन विश्राम भवन में सवेरे दस बजे से आयोजित समीक्षा बैठक में विभाग द्वारा प्रदेशभर में किए जा रहे विभिन्न कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। लोक निर्माण विभाग के सचिव, प्रमुख अभियंता, सभी मुख्य अभियंता और अधीक्षण अभियंता सहित सभी जिलों के कार्यपालन अभियंता बैठक में शामिल होंगे।

इनोवेट एंड कोड : पायथन, रोबोटिक्स और कोडिंग एसेंशियल में दो दिवसीय 'हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग'

आईईईई कलिंगा विश्वविद्यालय छात्र शाखा और भारत ड्रोन सिस्टम द्वारा आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। आईईईई कलिंगा विश्वविद्यालय छात्र शाखा ने बीडीएस एजुकेशन के सहयोग से, एसजेएम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चित्रदुर्ग, कर्नाटक में पायथन, कोडिंग और रोबोटिक्स पर दो दिवसीय हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग प्रोग्राम का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जो छात्रों को प्रोग्रामिंग और रोबोटिक्स की दुनिया में गोता लगाने के लिए एक अभिनव मंच प्रदान करता है। यह कार्यक्रम सीखने, सहयोग और रचनात्मकता के एक रोमांचक मिश्रण के रूप में खड़ा था, जो तकनीकी उत्साही और नवप्रवर्तकों को समान रूप से आकर्षित करता था।

यह कार्यक्रम सीखने, सहयोग और रचनात्मकता के एक रोमांचक मिश्रण के रूप में सामने आया, जो तकनीकी उत्साही और नवप्रवर्तकों को समान रूप से आकर्षित करता है। सत्र का संचालन एसजेएमआईटी के प्रिंसिपल डॉ. भारत पीबी, बीडीएस शिक्षा निदेशक कर्नल एनसी गुप्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (सीजी) में आईक्यूएसी की निदेशक डॉ. विजयलक्ष्मी, एसजेएमआईटी के आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. राजेश एएम और एसजेएमआईटी के ईसीई विभाग के एचओडी डॉ. सिद्धेश केबी ने किया। कार्यशाला में आकर्षक और व्यावहारिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी, जिनमें शामिल हैं: ब्लॉक-आधारित कोडिंग का परिचय, एमआईटी ऐप आविष्कारक, कोडी रॉकी और एमबोट के साथ रोबोटिक्स, स्क्रैच से पायथन में संक्रमण, पायथन के मूल सिद्धांत, बेसिक पायथन परियोजनाओं की खोज, स्क्रैच से अरुडिनो में प्रवास, अरुडिनो के साथ टिंकरिंग, स्क्रैच-आधारित परियोजनाओं का प्रदर्शन, जिसमें प्रोग्रामिंग एमबीओटी शामिल है विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए, mBlock के साथ Arduino स्केच को सहसंबंधित करना, HaloCode का परिचय, विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए प्रोग्रामिंग HaloCode, HaloCode के साथ कोडी रॉकी को जोड़ना, CyberPi का परिचय, विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए प्रोग्रामिंग CyberPi, CyberPi के साथ कोडी रॉकी को जोड़ना, CyberPi और HaloCode को एकीकृत करना। विभिन्न विश्वविद्यालयों के 10 समूहों में संगठित कुल 70 उत्साही छात्रों ने इस परिवर्तनकारी सीखने के अनुभव में भाग लिया। समूह-आधारित प्रारूप ने सहयोग, टीम वर्क और सहकर्मी सीखने को बढ़ावा दिया।

रामकृष्ण केयर अस्पताल में छत्तीसगढ़ का सबसे अत्याधुनिक आर्थो रोबोट का शुभारंभ, जोड़ प्रत्यारोपण अब होगा ज्यादा सटीक

रायपुर (विश्व परिवार)। 10 अप्रैल, 2025 को रायपुर में, उन्नत रोगी देखभाल की दिशा में एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, रामकृष्ण केयर अस्पताल ने VELYS रोबोटिक असिस्टेड सॉल्यूशन (VRAS) आर्थोपेडिक रोबोट का शुभारंभ हुआ। यह आर्थोपेडिक रोबोट छत्तीसगढ़ का सबसे अत्याधुनिक रोबोट है जो घुटने एवं कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण से पीड़ित रोगियों के लिए सर्जरी में अधिक सटीकता, छोटा चीरा एवं तेज रिकवरी व डिस्चार्ज का भरोसा देती है।

आज रामकृष्ण केयर अस्पताल में लॉन्च समारोह आयोजित किया गया, जहाँ अस्पताल के प्रख्यात आर्थोपेडिक सर्जनों की उपस्थिति में इस अत्याधुनिक आर्थोपेडिक रोबोट का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में रामकृष्ण केयर अस्पताल के मेडिकल एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, डॉ. संदीप दवे के साथ डॉ. पंकज धबलिया (HOD- आर्थोपेडिक्स, ट्रामा, जोड़ प्रत्यारोपण एवं स्पोर्ट्स इन्जूरी), डॉ. अंकुर सिंघल (चीफ रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण सर्जन), डॉ. प्रतीक धबलिया (रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण सर्जन), डॉ. सुमन नाग (आर्थोस्कोपी एवं स्पोर्ट्स इन्जूरी), डॉ. ललित जैन (कंसल्टेन्ट आर्थोपेडिक्स) एवं हॉस्पिटल के अन्य वरिष्ठ कंसल्टेन्ट, OT टीम एवं नर्सिंग टीम उपस्थित थे।

डॉ. संदीप दवे ने कहा, रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण के शुभारंभ के साथ, रामकृष्ण केयर अस्पताल अपने मरीजों को बेहतर परिणाम देने में अधिक सफल रहेगा एवं हम आने वाले दिनों में चिकित्सा को और बेहतर बनाने में समर्थ रहेंगें।

डॉ. पंकज धाबलिया ने कहा कि यह तकनीक हमें अत्याधिक सटीक सर्जरी करने में सक्षम बनाती है जो छोटा चीरा, कम दर्द और रोगी का शीघ्र रिकवरी सुनिश्चित करता है।

डॉ. अंकुर सिंघल ने कहा हमें छत्तीसगढ़ में ऐसे उन्नत आर्थोपेडिक रोबोटिक समाधान प्रदान करने पर गर्व है। Imageless कम खर्च, सर्जन के हाथों में पूरा नियंत्रण कम रिस्क के साथ होता है। इस सी.टी. फी जोड़ प्रत्यारोपण तकनीक से मरीजों का बेहतर रिकवरी सुनिश्चित होगी। डॉ. प्रतीक धाबलिया ने कहा जोड़ प्रत्यारोपण को अधिक सफल करने में वेलीस की यह रोबोट सक्षम है और इसके माध्यम से हमारे मरीजों का बेहतर इलाज कर पायेंगे। यह छत्तीसगढ़ का सर्वप्रथम VELYS Imageless रोबोटिक सिस्टम है।

VELYS आर्थोपेडिक रोबोट के साथ, रामकृष्ण केयर अस्पताल छत्तीसगढ़ में रोबोटिक घुटने एवं कूल्हे के प्रत्यारोपण का केंद्र बन गया है, जो घुटने एवं कूल्हे का इलाज और अधिक सरलता से किया जा सकेगा।

जैसे-जैसे लोगों की उम्र बढ़ती है, घुटने के गठिया सहित कई तरह की समस्याएं आने लगती हैं। इस रोबोट में उन्नत तकनीक शामिल है जो आर्थोपेडिक सर्जन को प्रत्येक रोगी की विशिष्ट शारीरिक रचना के लिए व्यक्तिगत रूप से बढ़ी हुई सर्जिकल सटीकता के साथ घुटने के प्रतिस्थापन को करने में मदद करती है, जिससे उन्हें अपने वांछित जीवन में वापस आने की सहायता मिलती है। चूंकि यह जोड़ प्रत्यारोपण तकनीक Image free है, इसमें CT Scan एवं Scanogram करवाने की जरूरत नहीं है। इससे मरीज रेडियेशन से वंचित रहते हैं एवं Scan के पैसे के खर्चे से भी बचते हैं।

रामकृष्ण केयर अस्पताल मध्य भारत के सबसे प्रतिष्ठित अस्पतालों में से एक है, जो छत्तीसगढ़ के दिल- रायपुर में स्थित है। यह अस्पताल स्वास्थ्य सेवा उत्कृष्टता का प्रतीक है, जो रोगी-केंद्रित देखभाल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। अत्याधुनिक तकनीक और उच्च प्रशिक्षित डॉक्टरों, नर्सों और सहायक कर्मचारियों की एक टीम से लैस, अस्पताल किफायती कीमतों पर निदान, उपचार और देखभाल के उच्चतम मानकों को सुनिश्चित करता है। अस्पताल में 400 से अधिक बेड हैं, जिनमें 125 से अधिक आई.सी.यू. बेड शामिल हैं, जिनमें सभी उन्नत और आधुनिक जीवन रक्षक और नैदानिक उपकरण हैं, जिनमें अत्यधिक कुशल डॉक्टर और देखभाल कर्मचारी हैं। सभी प्रमुख विशेषताओं में सबसे आधुनिक तकनीक के साथ एक समर्पित और अथक आपातकालीन विभाग के साथ, अस्पताल छत्तीसगढ़ और पड़ोसी राज्यों के लिए किसी भी आपात स्थिति और विशेष देखभाल के लिए पहली पसंद है।

सुशासन तिहार में शामिल सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने किया संवाद

समाधान शिविरों में सांसद बृजमोहन ने समस्याओं के समाधान के दिए निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के जनसेवा और सुशासन के संकल्प को साकार करने की दिशा में चलाए जा रहे सुशासन तिहार अभियान के अंतर्गत गुरुवार को सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने खूबचंद बघेल वार्ड एवं भक्त माता कर्मा वार्ड में आयोजित समाधान शिविरों में भाग लिया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल ने इन शिविरों में स्थानीय नागरिकों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं को सुना गया और बिजली, पानी, सड़क, मकान, साफ-सफाई, राशन कार्ड जैसी अन्य मूलभूत जनसुविधाओं से संबंधित शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। श्री अग्रवाल ने कहा कि यह अभियान जनप्रतिनिधियों और प्रशासन को जनता के और निकट लाने का सशक्त माध्यम बन रहा है। अब जनता को कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे, सरकार स्वयं उनके द्वार पर आ रही है।

सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि भाजपा सरकार जनसमस्याओं के समाधान के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और ऐसे शिविरों के माध्यम से सुशासन को हर नागरिक तक पहुँचाया जा रहा है।

इस अवसर पर महापौर श्रीमती मीनल चौबे, सभापति श्री सूर्यकांत राठौर, जोन अध्यक्ष श्री अम्बर अग्रवाल, पार्षद श्रीमती दुर्गा यादराम साहू एवं श्रीमती ममता सोनू तिवारी, निगम आयुक्त श्री विश्वदीप साहू सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे।

आरडीए अध्यक्ष नन्द कुमार साहू आज ग्रहण करेंगे कार्यभार

रायपुर विकास प्राधिकरण के पुनर्गठन के बाद 10वें अध्यक्ष

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन व्दारा रायपुर विकास प्राधिकरण के नव नियुक्त अध्यक्ष श्री नन्द कुमार साहू कल रायपुर विकास प्राधिकरण का न्यू राजेन्द्रनगर स्थित कार्यालय में दोपहर 12.30 बजे बजे अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण करेगें। इस अवसर पर माननीय आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओ.पी. चौधरी, रायपुर के विधायक गण, विभिन्न निगम-मंडलों के अध्यक्ष सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेगें।

श्री नंद कुमार साहू छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद सन् 2004 में पुर्नगठित रायपुर विकास प्राधिकरण के 10वें अध्यक्ष होंगे। 1997 में राजनैतिक क्षेत्र के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र प्रवेश करने के बाद श्री साहू पार्टी के विभिन्न पदों पर रहते हुए हरदीहा साहू समाज रायपुर के जिला अध्यक्ष और संरक्षक रहे हैं। पूर्व में वे ग्राम सरपंच, जिला पंचायत सदस्य, छत्तीसगढ़ राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य तथा रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के विधायक रह चुके हैं। वे श्री श्याम बैस, श्री वर्धमान सुराना, श्री सुनील सोनी, श्री संजय श्रीवास्तव, श्री सुभाष धुप्पड़ के बाद प्राधिकरण के छठवें अशासकीय अध्यक्ष है।

भारतीय योग संस्थान का 59वां स्थापना दिवस धूमधाम एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया

योग से जुडों, तन मन को सशक्त बनाओ, स्थापना दिवस पर नव चेतना जगाओ

रायपुर (विश्व परिवार)। आज भारतीय योग संस्थान, रायपुर के समस्त योग केंद्रों से लगभग 1000 साधकों ने मिलकर सुभाष स्टेडियम, नलघर चौक में स्थापना दिवस बड़े ही धूम धाम से, उत्साह के साथ मनाया। आसनों का उत्कृष्ट प्रदर्शन लता, रजनी, पूर्णिमा और प्रगति के द्वारा किया गया। मंच संचालन सुदेशना मेने और रिया फतनानी ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ विशेष अतिथि माननीय श्री रूपनारायण सिन्हा जी (अध्यक्ष योग आयोग, छ.ग.शासन), जिला और जोन अधिकारियो ने दीप प्रज्वलन कर किया विशेष अतिथि ने आशीर्वचन के रूप में आज महावीर जयंती पर उनके त्याग और तपस्या की शक्ति को योग से ही प्राप्त करने का संदेश देते हुए उपस्थित योग करने वाले महिलाओं को सीता, सावित्री, गार्गी, मदारसा के रूप में संबोधित किया। अम्बेडकर पार्क योग केंद्र के द्वारा सूक्ष्म क्रिया का अभ्यास योग गीत के साथ करवाया गया। सुदेशना जी द्वारा भजन और आनंद नगर योग केंद्र द्वारा सरस्वती वंदना ने सभी को बांधे रखा। मुकेश सोनी जी के द्वारा शरीर के अंगो को प्रभावित करने और स्वस्थ करने वाले लाभकारी आसान त्रिकोणासन, कोणआसान, उष्टासन, भुजंगासन और नौकासन का बेहतरीन अभ्यास करवाया गया। वंदना आहूजा तथा राजेश डागा के द्वारा प्राणायाम तथा ध्यान करवाया गया। पिंकी जैन ने संस्थान परिचय और नित्य योग साधना करने के लाभ पर वार्ता दी।योग हेतु प्रेरित करने सेल्फी जोन की व्यवस्था सरिता और गायत्री की टीम ने मिलकर किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में चक्र साधना पर योग प्रदर्शन, सिद्धिविनायक गार्डन, देवेन्द्र नगर योग केंद्र और दशावतार पर सुंदर झाकी का प्रदर्शन हितवाद प्रेस योग केंद्र के साधकों ने किया। सभी में ऊर्जा का संचार कर दिया। अंत में राष्ट्रगान राजेश अग्रवाल जी द्वारा भारतमाता की जय घोष के साथ समापन किया गया और प्रसाद की व्यवस्था कटोरा तालाब केंद्र से प्रभा और सिंटू की टीम ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शंकर नगर पार्षद श्री रोहित साहू, राजेश अग्रवाल, हेमंत साहू, योगीराज साहू, कुश जसवानी, कंवलजीत, लता चौधरी, नीलम नवलानी, पूनम गेही, रेखा, प्रकाश बजाज, ए एस राव, प्रभा, सिंटू ममता, गीता, अनिता, सोनिया, जया, विनोद अग्रवाल और फोटोग्राफी टीम में मितेश, लोकेश, संदीप हर्षपाल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चंगोराभाठा में महापौर मीनल चौबे ने किया श्रमदान

रायपुर (विश्व परिवार)। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रायपुर नगर पालिक निगम के जोन क्रमांक 5 के अंतर्गत डॉक्टर खूबचंद बघेल वार्ड क्रमांक 68 के क्षेत्र के तहत महादेवा तालाब चंगोराभाठा में आज मानव श्रृंखला बनाकर सफाई श्रमदान कर राजधानी शहर रायपुर की प्रथम नागरिक नगर पालिक निगम महापौर मीनल चौबे ने डॉक्टर खूबचंद बघेल वार्ड क्रमांक 68 पार्षद दुर्गा यादराम साहू, रायपुर शहर जिला भाजपा अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर, लाखेनगर मण्डल अध्यक्ष सचिन सिंघल, नगर निगम जोन 5 जोन कमिश्नर राजेश्वरी पटेल, जोन स्वास्थ्य अधिकारी सन्दीप वर्मा, स्वच्छता निरीक्षक दिलीप साहू सहित वार्ड निवासी गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, महिलाओं, नवयुवकों, आम जनों आदि ने श्रमदान किया।

अब आईजी नहीं, डीजी होंगे ईओडब्ल्यू के प्रमुख, राज्य सरकार ने जारी की नई अधिसूचना

रायपुर (विसं)। राज्य सरकार ने विभिन्न शासकीय विभागों के प्रमुखों को लेकर नई अधिसूचना जारी की है। इस अधिसूचना में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं, जिनमें सबसे बड़ा फेरबदल आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो (EOW) को लेकर हुआ है। अब तक EOW का नेतृत्व आईजी (IG) स्तर के अधिकारी कर रहे थे, लेकिन नई व्यवस्था के तहत इस ब्यूरो के प्रमुख महानिदेशक (DG) स्तर के अधिकारी होंगे। यह निर्णय राज्य सरकार द्वारा आर्थिक अपराधों की जांच को और अधिक प्रभावी और सशक्त बनाने की दिशा में लिया गया है।

एनआईटी रायपुर में आईसीबेस्ट-2025 सम्मेलन का शुभारम्भ

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर के बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित तीसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन बायोमेडिकल इंजीनियरिंग साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आईसीबेस्ट) 2025 का उद्घाटन 10 अप्रैल 2025 को हुआ। यह दो दिवसीय सम्मेलन 10 और 11 अप्रैल को आयोजित किया जा रहा है। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, एनआईटी रायपुर के निदेशक, डॉ. एन. वी. रमना राव थे, और, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष डॉ. अरिंदम बिट विशेष अतिथि रहे 7 इस दौरान कॉन्फ्रेंस चेयरमैन डॉ. बिकेश कुमार सिंह भी मौजूद रहे। मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। डॉ निशांत सिंह, डॉ नीलम शोभा निराला, डॉ सौरभ गुप्ता और डॉ आर मारीश्वरन इस कॉन्फ्रेंस के समन्वयक है।

डॉ. बिट ने अपने संबोधन में सभी गणमान्य अतिथियों, सहभागियों और प्रायोजकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का उद्देश्य बायोमेडिकल इंजीनियरिंग की महत्ता को सामने लाना है और यह सम्मेलन इस क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

सम्मेलन के आयोजन और इसके इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बायोमेडिकल विभाग के अस्सिटेंट प्रोफेसर डॉ. एम. मारीश्वरन ने बताया कि आईसीबेस्ट वर्षों से निरंतर विकसित हो रहा है और आज यह स्वास्थ्य क्षेत्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस वर्ष सम्मेलन में कुल सात तकनीकी सत्र होंगे और प्रत्येक सत्र से एक श्रेष्ठ शोध पत्र को सर्वश्रेष्ठ पेपर के रूप में सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मूल्यांकन की प्रक्रिया बेहद पारदर्शी रखी गई है। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा आईसीबेस्ट का सोवेनियर पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

सक्रिय कार्यकर्त्ता सम्मेलन : भाजपा राष्ट्र निर्माण के लिए सदैव समर्पित : सांसद संतोष पांडेय

भाजपा के 46 वें स्थापना दिवस पर विधानसभा स्तरीय सक्रिय सदस्य सम्मेलन पीजी कालेज के ऑडिटोरियम में सम्पन्न

कवर्धा (विश्व परिवार)। भाजपा के 46 वें स्थापना दिवस के मौके पर बुधवार को पीजी कॉलेज के ऑडिटोरियम में विधानसभा स्तरीय सक्रिय कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित की गई। सम्मेलन के मुख्य वक्ता व राजनांदगांव लोक सभा के सांसद संतोष पांडेय ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा भारतीय जनता पार्टी एकमात्र ऐसी पार्टी है, जिसमें लोकतांत्रिक परंपराओं का निर्वाहन किया जाता है। सांसद ने कहा कि पार्टी के लिए सत्ता नही, राष्ट्र प्रथम होता है। पूर्व पीएम अटल बिहारी व पीएम नरेंद्र मोदी के समर्पण और कड़ी मेहनत से आज भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प और कार्यशैली से भारत आज आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कोरोना काल के दौरान जब पूरा विश्व सदमे में थी। उस समय हमारे देश के वैज्ञानिक पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वैक्सीन बनाने में लगे थे। भारत में बनी वैक्सीन 98 देशो में भेजी गई, कई पड़ोसी देशों को मुक्त में वैक्सीन उपलब्ध कराए गएद्य इससे पहले वैक्सीन के लिए हम विदेशों पर निर्भर हुआ करते थेद्य आज प्रधानमंत्री मोदी के कुशल नेतृत्व में हम उन तमाम वस्तुओं पर आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं। जिन पर कभी हमारा देश दूसरे देशों पर आश्रित हुआ करती थी। उन्होंने कहा 2047 तक हमारा देश आत्म निर्भर हो जाएगा। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 से अब तक बीते इन अल्प काल में ना केवल अर्थ व्यवस्था को दुरूरत किया बल्कि विश्व स्तर पर पर्यावरण सुधार के अभियान चलाया है। सांसद ने बताया हमारा देश इंटरनेट, अक्षय ऊर्जा, जैव ईंधन, ग्रीन हाइड्रोजन से भरपूर ऊर्जा हमको मिलने वाली है। हाल ही में 964 करोड़ की लागत से राजनांदगांव क्षेत्र में सोलर ऊर्जा का प्लांट लगाया गया है। इसकी बिजली हम रेलवे को बेंच रहे हैं। ऐसे ही हमारा देश आने वाला समय में आत्मनिर्भर हो जाएगा। उन्होंने कहा मोदी सरकार देश हित में गुड गवर्नेंश व समरसता के साथ देश को गति देने का काम कर रही है। उन्होंने सक्रिय सदस्यों से केन्द्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की आग्रह किया।

इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष राजेंद्र चन्द्रवंशी ने सक्रिय कार्यकर्ताओं को सांगठनात्मक विषयों पर समीक्षा की। उन्होंने कार्यकर्ताओं संगठन द्वारा 6 से 14 तक दिए गए प्रकल्पों बूथ समिति की बैठक, मंदिर, अस्पताल, स्कुल, गलियों की स्वच्छस्ता, लाभर्थियों से मुलाक़ात उनसे बात चित, समाज के मुखिया से मेल मुलाक़ात, उनके घर भोजन, भाजपा के झंडो के साथ गलियों में यात्रा, संध्या में ग्रामीणों या वासियों की चौपाल लगाने व गांव-बस्ती चलो अभियान को निर्धारित समय में पूर्ण करने को कहा।

जिला भाजपा के उपाध्यक्ष तथा सक्रिय कार्यकर्ता सम्मेलन के संयोजक जसविंदर बग्गा ने अपनी बातें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के संदेशों से प्रारंभ किया। अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, और कमल खिलेगा। उन्होंने कहा भाजपा के कार्यकर्ता ही वो दधीचि है, जिन्होंने राष्ट्र व धर्म रक्षा के लिए अपनी हड्डियां गलाई। जिसके ऊपर आज बीजेपी पंच से लेकर संसद तक अपनी सरकार बनाई है। श्री बग्गा ने कहा कार्यकर्ता पूरे जीवन अटूट संघर्ष करते हुए पार्टी को इस मुकाम तक पहुंचाएं जो पार्टी 1980 में शून्य से प्रारंभ हुई थी। आज 45 वर्ष के राजनीतिक सफर में उत्कर्ष को प्राप्त किया है। उसका एक ही ध्येय रहा है राष्ट्र प्रेम और धर्म की रक्षा के लिए तन समर्पित, मन समर्पित और ये जीवन समर्पित की भाव है। सक्रिय कार्यकर्तृता सम्मलेन के मौके पर अशोक चंद्रवंशी ने देश में हुए बदलाव और विकसित भारत पर विस्तार से जानकारी दी। सक्रिय कार्यकर्तृता सम्मेलन में संगठन सह प्रभारी अंजू राजपूत, मोतीराम चंद्रवंशी, डॉ सियाराम साहू, महामंत्री द्वय क्रांति गुप्ता, संतोष पटेल, नगर पालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी, कोषाध्यक्ष रुपेश जैन, चन्द्रकुमार सोनी समेत जिला, जनपद, नगर पंचायत के अध्यक्ष, सदस्य व बड़ी संख्या में जिले भर से आमंत्रित भाजपा के सक्रिय सदस्य उपस्थित रहे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354